RNI: RJHIN/ 2013/ 53539

शिव आमंत्रण

वर्ष: 5, अंक: 9 | RNI: RJHIN/2013/53539 | सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण | हिन्दी (मासिक), - 2017, सितम्बर, सिरोही, पृष्ठ: 12, मूल्य : 7.50 रुपए

ऐतिहासिक पहल

ब्रह्माकुमारीज ने संभाला आबूरोड रेलवे स्टेशन की स्वच्छता का जिम्मा

शिव आमंत्रण, आबू रोड । देश के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है। जब कोई अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक संस्थान रेलवे स्टेशन की स्वच्छता का जिम्मा संभाल रहा है। केन्द्र सरकार की स्वच्छता की मुहिम में यह नया पड़ाव है। देश में करीब 8500 रेलवे स्टेशन हैं, और उनकी देखरेख और साफ सफाई का जिम्मा भारत सरकार के रेल मंत्रालय के पास है। कहते हैं मन की सफाई के लिए आध्यात्म की पाठशाला में आना पड़ता है। राजस्थान के माउण्ट आबू आने वाली एक बहुत बड़ी आबादी ब्रह्माकुमारीज और इसके सुरम्य वातावरण की वजह से आती है। अब जब आप आबूरोड आएंगे तो देखेंगे कि रेलवे स्टेशन पर जो भी साफ सफाई दिख रही है, वो एक खास वजह से है। रेल्वे के इतिहास मे पहली बार स्वच्छता को लेकर ब्रहमाकुमारीज संस्थान तथा रेलवे के साथ आबूरोड स्टेशन की साफ सफाई का करार हुआ है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान मशीनों के जरिए स्टेशन की सफाई करायेगा। इसे लेकर ब्रह्माकुमारीज संस्थान गम्भीर है।

दादी स्वच्छ भारत मिशन की ब्रांड अम्बेसडर

भारत सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन के तहत ब्रह्माकुमारीज संस्था की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी को ब्रांड एंबैसेडर बनाया है। इस लिहाज से भी स्वच्छता को तरजीह देनी चाहिए। हजारों लोग रोज रेलवे स्टेशन से आते हैं, इसलिए सफाई जरूरी थी, हमनें बात की तो रेल्वे के कान्ट्रेक्ट सिस्टम की वजह से कुछ दिक्कतें आ रही थीं। अलग से इंफ्रा स्ट्रक्चर बनाकर संस्थान के लिए पिक एंड ड्राप की सुविधा तैयार की गयी है। उसकी साफ सफाई से शुरूआत की गयी है। फिर अब पांच साल के लिए स्टेशन प्लेटफार्म और पूरा परिसर सफाई का करार कर लिया है। संस्थान स्टेशन की सजावट करने का भी प्रयास करेगा।

अनूठी पहल : उत्तर पश्चिम रेल्वे ने इस पहल के लिए कहा कि, यह भारतीय रेल्वे द्वारा उठाई गयी अपनी तरह की अनूठी पहल है जहां एक आध्यात्मिक संगठन ने 'स्वच्छ भारत ग्रीन इंडिया'के तत्वावधान में एक स्टेशन की सफाई का जिम्मा लिया है। इस कदम ने भारतीय रेल्वे में एक मिसाल कायम की है की निजी संगठन भी अपनी भावनात्मक व सामाजिक जिम्मेदारिओं के अन्तर्गत स्टेशनों के विकास में अपना योगदान दे सकते है।

रेल्वे की होगी भारी बचत : रेल्वे ने ये भी सपष्ट किया की इससे रेलवे को भारी आर्थिक बचत होगी, जो ब्रह्माकुमारीज द्वारा वहन किया जाएगा। प्रेस रिलीज में कहा गया कि इस पहल से भारतीय रेल्वे को 6.20 लाख रुपये प्रति माह व 3.72 करोड़ की राशि 05 वर्ष (एमओयू अवधि) के दौरान राजस्व में बचत करने में मदद मिलेगी। उत्तर पश्चिम रेल्वे ने इस खास शुरूआत के लिए बाकायदा एक प्रेस विज्ञप्ति निकाली और इस अनूठी पहल की सूचना दी।

एक वर्ष पूर्व हुआ था समझौता : यह समझौता दो वर्ष पूर्व हुअ। तब तत्कालीन महाप्रबन्धक आर सी अग्रवाल तथा डीआरएम नरेशा सलेचा की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था। इस मौके ब्रह्माकुमारीज संस्थान के सूचना निदेशक बीके करूणा, ट्रांसपोर्ट प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके सुरेश शर्मा, प्रोजेक्ट के कोआर्डिनेटर बीके सोमशेखर ने इसमें महत्वपूर्ण सहभागिता थी।

वास्तव में ब्रह्माकुमारीज संस्था शानदार सेवा कर रही है। और निश्चित तौर पर कह सकता हूँ कि समाज का अच्छा मार्गदर्शन कर रही है।

- **सुरेश प्रभू,** रेलमंत्री भारत सरकार, दिल्ली

ऐसे होगी सफाईः स्टेशन को हमेशा साफ सुथरा रखने के लिए मेकेनाईज्ड मशीनों का इस्तेमाल किया जायेगा। इसके साथ सुप्रवाईजर हमेशा इसकी निगरानी करेंगे। 24 घंटे में तीन शिफ्ट में सफाईकर्मी इसका ध्यान रखेंगे।

ये दी है सुविधायेंः ब्रह्माकुमारीज ने स्टेशन पर यात्रियों को बैठने के लिए स्टील की बेंच, कूड़ादान तथा शोभा बढ़ाने के लिए गमले प्रदान किये हैं।

अंदर पढ़ें.....

सावन में शिव की हो गयी तीन सौ युवा बहनें ...पेज-2

योग ध्यान ही गीता का सच्चा मर्म ...पेज-3

फरिश्ता समान स्थिति हो तब सेवा में सफलता मिलेगी। ...पेज-5

बुराई रूपी रावण से बचें। ...पेज-9

राष्ट्रपति को बताया राखी का आध्यात्मिक रहस्य

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और उनकी पत्नी को राखी बांधते हुए बीके बहनें।

शिव आमंत्रण, दिल्ली। भारत के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को दिल्ली सिरीफोर्ट की बीके रमा, बीके सपना ने राखी का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए रक्षासूत्र बांधा। इसके साथ ही राजयोगिनी दादी जानकी द्वारा भेजी गयी शुभकामनाएं भी दी। इस अवसर पर राष्ट्रपति की धर्मपत्नी को भी बहनों ने राखी बांधकर बुराइयों को मिटाने का संकल्प कराया।

दादी की कुशलक्षेम पूछ, पीएम मोदी ने बंधवाई राखी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को राखी बांधते हुए ओआरसी की निदेशिका बीके आशा।

शिव आमंत्रण, दिल्ली। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को रक्षाबन्धन के आध्यात्मिक रहस्यों के साथ ओम शांति रिट्रीट सेन्टर की निदेशिका बीके आशा ने राखी बांधी। इसके पश्चात प्रधानमंत्री मोदी ने ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी की कुशलक्षेम पूछी। तत्पश्चात उन्हें दिल्ली में होने वाले कार्यक्रम में आने का निमंत्रण भी दिया। इस अवसर पर पांडव भवन की बीके सविता, बीके शक्ति तथा बीके रघु समेत कई लोग उपस्थित थे।

नेपाल की राष्ट्रपति विद्या भंडारी को बांधा रक्षासूत्र

काठमांडू। नेपाल की राष्ट्रपति विद्या देवी भण्डारी को काठमांडू जोन की निदेशिका बीके राज ने रक्षासूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं।

समर्पण समारोह : 300 युवा बहनों ने परमात्मा शिव को किया समर्पित

बहनों ने लिया आजीवन सेवा का संकल्प

शिव आमंत्रण ■ शांतिवन

ब्रह्माकुमारी संस्था के शांतिवन परिसर में तीन सौ बहनें संस्थान के लिए समर्पित हो गई। इस मौके पर उनके माता-पिता और नाते रिश्तेदार भी मौजूद थे। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि यह जीवन कई जन्मों से उत्तम है। जिसके जीवन में स्वयं परमात्मा का वास हो जाता है वह हमेशा के लिए बुराइयों से मुक्त हो जाता है।

जीवन में धारण करें उच्च आदर्श

कार्यक्रम प्रबंधिका मुन्नी बहन ने युवा बहनों से आह्वान किया कि वे जीवन में उच्च आदर्श, मूल्यों को धारण कर महान बने और दूसरों के लिए प्रेरणादायी बनें। इस मौके पर संस्था के महासचिव बीके निर्वैर ने कहा, कि हमारी बहनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि नारी चाहे तो वह विश्व को बदल सकती है। कुरीति और बुराईयों को समाप्त कर सकती है। ये बहनें खुद का सकारात्मक बदलाव करते हुए समाज को बदलने में कामयाब होगी। संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बृजमोहन, शांतिवन प्रबंधक भूपाल, अमीरचंद समेत कई लोगों ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के बीच समर्पण के दौरान समर्पित होने वाली बहनों को अपने लक्ष्य और अपने श्रेष्ठ कर्म के लिए उनसे प्रतिज्ञा कराई जाती है, जिससे की वे अपने लक्ष्य में कामयाब हो सके। समाज को कुछ दें सकें इसलिए किया समर्पण।

दीप प्रज्ज्वलन कर समर्पण समारोह का शुभारंभ करतीं दादी रतनमोहिनी, बीके मुन्नी, बीके सरला, बीके भारती व साथ में समर्पित बहनें।

समाज में कुछ करने की तमन्ना ने दिया जीवन को समर्पित करने की शक्ति

मै बनारस से आयी हूँ मेरा ये जीवन समाज सेवा के लिए समर्पित कर रही हूँ। इससे बडी और कोई सेवा नही है। इस संस्था मे सत् परमात्मा आकर के सत्य् गीता ज्ञान दे रहे है। परमात्मा के ज्ञान के आधार पर की जानेवाली सेवा सबसे श्रेष्ठ है यह मैने जान लिया है ।

- बीके आशा, बनारस

मैंने आज अपना जीवन पूरी तरह से ईश्वर को समर्पित कर दिया । मैं अपने जीवन को प्रेरणादायक बनाना चहती हूँ। लोकिक में जब कोई शादी करता है तो एक घर को ही रोशन करता है पर मुझे तो परमात्मा से शादी करके अनेक घरों को रोशन करने का मोका मिला है। अपने आप को बहुत ही खुशनसीब महसूस कर रही हूँ।

- बी.के आरनिका, दिल्ली

जब से बाबा का ज्ञान मिला तब से ही उसको अपना पति मान लिया था। टीवी में जब भी शिव पार्वती का विवाह देखती तो मन ही मन में सोचती थी कभी मैं भी ऐसे ही शिव को वरूगीं। आज यह सपना पूरा हो गया, मैं शिव की पार्वती बन गयी हूं, जिसका शास्त्रों में गायन है।

- बी.के कृत्ति, कोल्हापुर महाराष्ट्र

मै बचपन से ही ईश्वरीय ज्ञान मे हूं मैने लौकिक मे एमबीए किया है। बचपन से ही मुझे सादा जीवन, त्यागी तपस्वी जीवन बहुत पंसद है। मानव का जीवन पवित्रता से भरपूर हो तो सच्चा सुख मिलता है। तो मेरा यही लक्ष्य है कि अपनी पवित्रता एवं तपस्वी जीवन से हम विश्व का परिवर्तन करें। मै सभी युवाओं का आह्वान करती हूँ - **बीके रुचिका, फरीदाबाद, हरियाणा**

सब लोग तो भगवान से मदद मांगते हैं मगर जब पता चला की भगवान मुझसे विश्व परिवर्तन के कार्य में मदद मांग रहे हैं तो उसी क्षण मैंने अपना पूरा जीवन प्रभु को समर्पण कर दिया था। बस तभी से ही इस दिन का इंतजार था, आज वो इंतजार खत्म हुआ। मानो लग रहा है कि आज मुझे सारे जहान की खुशी मिल गई। **- बी.के नीलम,** जयपुर राजस्थान

यह है समर्पण

ब्रह्माकुमारी संस्था के संपर्क में आने के बाद कम से कम पांच साल तक प्रशिक्षु के तौर पर राजयोग मेडिटेशन के साथ संस्था के नियमों पर संपूर्ण रूप से चलने वाली बहनों का समर्पण होता है। जिसमें उनके माता पिता की भी सहमति होती है। समर्पण के बाद ये बहनें संस्थान के देशभर मे फैले सेवा केंद्रो पर चली जाती है। उनकी संपूर्ण जिम्मेदारी संस्था की होती हैं।

ओम शांति चैनल ने लोगों में बढ़ाई पैंठ

बीके हरीलाल

ओम शांति चैनल ने लोगों में बनायी पैठ हर किसी के पास तक पहुंच बनाने के लिए गॉडलीवुड द्वारा शुरू किया गया ओम शांति चैनल गॉडलीवुड लगातार लोगों का लोकप्रिय बनता जा रहा है। क्योंकि आजकल डिजीटल और इंटरनेट का जमाना है। ऐसे में हर किसी के पास सहज ही पहुंचा जा सकता है क्योंकि हर किसी के हाथ में मोबाईल और डिजीटल संसाधन है। ओम शांति चैनल में हर प्रकार के कन्टेन्ट उपलब्ध है। जिससे हर कोई भी अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने में उपयोग कर सके। ओम शांति चैनल अपने कन्टेंट और प्रजेन्टेशन के जरिये लगातार अपनी लोगों के बीच लोकप्रिय हो रहा है। गॉडलीवुड स्टूडियो का यह प्रयास है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक परमात्मा शिव के अवतरण का संदेश पहुंचे तथा लोग अपना भाग्य बना सकें। इसका लिंक है **www.omshantichannelgodlywood**

चिकित्सक हैं भगवान के फरिश्ते : डॉ. शुभदा नील

शिव आमंत्रण, बिलासपुर। ''कहते हैं डॉक्टर इज् नेक्स्ट टू गॉड। लेकिन उसमें भी गाइनेकोलॉजिस्ट तो भगवान के द्वारा भेजे गए फरिश्ते की तरह हैं जो एक बच्चे में सु-संस्कार, अच्छा स्वास्थ्य, खुशनुमा जीवन और श्रेष्ठ बुद्धि देने के लिए माता को सही दिशा-निर्देश दे सकती हैं। इसके लिए स्वयं के मन का सशक्त होना बहुत जरूरी है। जब स्वयं सशक्त होंगे तब ही हम दूसरों को सशक्त बना सकेंगे। चिकित्सक गर्भवती माताओं को तीन प्रकार के आयामों- संतुलित, सात्विक तथा पोषक आहार, शारीरिक व्यायाम एवं योगासन एवं तनावमुक्त जीवन के लिए राजयोग मेडिटेशन को जीवन में धारण करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इसका मुख्य प्रभाव यह होगा कि सिज़ेरियन रेट कम होगा, माता की डिलीवरी नॉर्मल होगी तथा होने वाला बच्चा स्वस्थ और संस्कारित होगा। उक्त बातें हॉटल ईस्ट पाकिजा में गायनेकोलॉजिस्ट डॉक्टर्स के लिए आयोजित साइंटिफिक सेशन को ''बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में गायनेकोलॉजिस्ट्स की भूमिका'' विषय पर संबोधित करते हुए डिवाइन संस्कार रिसर्च फाउण्डेशन की को-ऑर्डिनेटर डॉ. शुभदा नील ने कही। आपने कहा कि यह जरूरी नहीं कि एक स्वस्थ व्यक्ति सदा खुश रहे लेकिन ये निश्चित है कि सदा खुश रहने वाला सदा स्वस्थ जरूर रहेगा। इसलिए गर्भवती माताओं को शांति की टेक्नीक सिखाना बेहद जरूरी है क्योंकि जब मां का मन शांत होगा, खुश होगा तो इससे बच्चे में वह संस्कार स्वत: जायेगा। और इसी श्रेष्ठ संस्कार से श्रेष्ठ संसार का निर्माण संभव हो सकेगा। इतिहास में अभिमन्यु, शिवाजी, गांधीजी जैसे महापुरूष गर्भसंस्कार के साक्षात् उदाहरण हैं। इस अवसर पर दिल्ली से पधारीं इन्फर्टिलिटी एक्स्पर्ट डॉ. शिवानी सचदेव गौर ने ''रोल ऑफ माइक्रोन्यूट्रियेन्ट्स इन मैनेजमेन्ट ऑफ इन्फर्टिलिटी'' विषय पर सभी को संबोधित किया और महिलाओं में बांझपन दूर करने के लिए हुए नए-नए रिसर्चों से डॉक्टरों को अवगत कराया।

कार्यक्रम के अंत में ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके मंजू ने सभी को संस्था की ओर से ईश्वरीय सौगात भेंट की और मेडिटेशन सिखाने की सेवा देने को आश्वस्त किया।

इस अवसर पर बिलासपुर ऑब्स्टेट्रिक्स एण्ड गायनेकोलॉजिकल सोसाइटी की अध्यक्षा डॉ. संगीता जोगी, सचिव-डॉ. कविता बब्बर सहित शहर की मुख्य गायनेकोलॉजिस्ट चिकित्सक उपस्थित थे।

मथुरा, यूपी

अभिनेत्री एवं भाजपा सांसद हेमा मालिनी को राखी बांधती हुई बीके कुसुम बहन।

सीतापुर, युपी

जिला कारागार में कैदियों को राखी बांधने के पश्चात जेल अधीक्षक दिनेश चन्द मिश्रा, ब्रह्माकुमरी सितापुर सेन्टर प्रभारी बीके योगेश्वरी एवं अन्य ।

मुंबई

फिल्म अभिनेता अनुपम खेर, फिल्म निर्माता सुभाष घई सहित कई सिने अभिनेताओं को मलाड सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कुंती ने राखी बांधी।

मुम्बई

बॉलीवुड के प्रसिद्ध गायक शान को बोरीवली की बीके दिव्या ने माउंट आबू आने का निमंत्रण देते हुए रक्षा सूत्र बांधा।

सुलतानपुर, युपी

कारागार में कैदियों को राखी बांधने के पश्चात जेल अधिक्षक अमित के साथ ग्रुप फोटो में बीके आशा, बीके शिवकान्त द्विवेदी, बीके जेपी पांडेया एवं अन्य।

छतरपुर, मप्र

छतरपुर जिला कलेक्टर को रक्षा सूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी छतरपुर की संचालिका बीके शैलजा तथा साथ में अन्य बहनें।

उच्च जीवन के लिए व्यंजन की भूमिका

सात्विक और आनंददायी होना चाहिए हमारा भोजन

हमारा मस्तिष्क ज्ञान के आदान-प्रदान का माध्यम है। आत्मा ही उसके द्वारा जीवन का सारा कार्य करती है। आत्मा के शरीर में रहने से ही दसों इन्द्रियाँ अपने कार्यों में प्रवृत्त रहती हैं। जैसे कफ-पित्त-वायु के कुपित होने पर शरीर रोगी बन जाता है, ठीक वैसे ही आत्मा पर रजोगुण व तमोगुण की छाप पड़ने से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य की उत्पत्ति होने लगती है। सर्वांगीर्ण स्वास्थ्य और उत्थान चाहते हैं तो सतोप्रधान आहार-विहार तथा व्यवहार अब परम आवश्यक है।

- बीके रामलखन, शांतिवन

जैसे वायुयानों के उड़ाने के लिये विशुद्ध पैट्रोल चाहिये, वैसे ही उड़ती कला में जाने के लिये और उँच पद पाने के लिए अब भगवान को भोग लगाया हुआ ब्रह्मा-भोजन नितान्त आवश्यक है। जैसे ईधन में मिलावट करने से इंजन में गतिरोध उत्पन्न होने लगता है, वैसे ही कलियुग से सतयुग में जाने वालों के लिये सम्पूर्ण सात्विक और भोग लगा हुआ भोजन ही करना चाहिये, नहीं तो मन चंचल और बुद्धि कमजोर ही बनी रहेगी। जैसे विशुद्ध ईंधन से इंजन सुचारू रूप से चलता है, वैसे ही कमाने वाले, भोजन बनाने वाले, खिलाने वाले और साथ में रहने वाले लोगों के सतोगुणी होने से आत्मायें सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, अहिंसा परमो-धर्म की ओर बढ़ते हुए 16 कला अवतार बन जाती हैं। हमारे शुभ संकल्प सतोगुणी भोजन के आधार से ही निर्मित होते हैं अर्थात् मानसिक स्वास्थ्य के लिये भी सात्विक पदार्थों का सेवन परम आवश्यक है। अन्यथा रामायण में कहा भी है - ''कल-बल-छल कर जाहिं समीपा, अंचल मारि बुझावहिं दीपा अर्थात् ब्रह्मा-भोजन नहीं स्वीकारेंगे तो विकार व बुराईयाँ किसी-न-किसी कारण को उत्पन्न कर, आपके ज्ञान-दीप को बुझाती और उलझाती ही रहेंगी।

जीवन में आ जाती है ओजस्विता

दूध, मक्खन, घी, बादाम, मूँगफली, तिल, नारियल, सोयाबीन, रोटी, चावल, छिलके वाली दालें आदि सात्विक पदार्थ कहलाते हैं, जीवन में स्थिरता लाने वाले गेहूँ, चावल, जौ, ज्वार, बाजरा, अंकुरित की हुई दालें सात्विक पदार्थ कहलाती हैं। ऐसा भोजन करने वाले दयालु-कृपालु मिल बैठ-बाँट कर खाने वाले, आस्तिक, सहनशील, सत्य बोलने और मर्यादाओं पर चलने वाले मेधावी बन जाते हैं। विषय-विकारों से ऐसे लोग अनासक्त रहते इस कारण धैर्यवान व स्मृति सम्पन्न होते जाते हैं। वे आत्म-चिन्तन करते हुए परमात्म-मिलन के लिये सदा उत्कंठित रहते हैं। इन्द्रिय निग्रही होने से पवित्रता-सुख-शान्ति और आनन्द उनके गले का हार बन जाता है। सतोप्रधान नर-नारी ही सतयुग में मर्यादा पुरुषोत्तम देवी-देवता कहलाते हैं। **...क्रमश**

पवित्रता ही सुख-शान्ति का आधार : स्वामी जीवन देव महाराज

योग ध्यान ही गीता का सच्चा मर्म है : डॉ. नागेन्द्र

शिव आमंत्रण ■ गुरूग्राम

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर में भगवद् गीता विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर देश के अनेक विद्वान, आचार्य एवं महान विचारक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारंभिक सत्र में विवेकानन्द योगा अनुसंधान संस्थान, बेंगलोर के अध्यक्ष डॉ. नागेन्द्र ने कहा, कि योग और ध्यान ही भगवद् गीता का असली सार एवं मर्म है। उन्होंने कहा, कि भगवद् गीता एक योग शास्त्र है न कि हिंसा का। वास्तव में गीता में वर्णित युद्ध मनुष्य के आन्तरिक बुराईयों एवं अवगुणों को समाप्त कर दैवी गुणों को धारण करने का प्रतीक है। उन्होंने कहा, कि योग को स्कूली स्तर से विश्व-विद्यालय स्तर तक लागू करने से ही विश्व परिवर्तन संभव है।

कार्यक्रम में यतिधाम वृन्दावन से पधारे स्वामी जीवन देव महाराज ने बताया, कि जीवन में आन्तरिक एवं भौतिक पवित्रता का बहुत बड़ा महत्व है। पवित्र जीवन के आधार पर ही सुख-शान्ति का अनुभव हो सकता है। उन्होंने कहा, कि दिव्य-गुणों को अपनाने से हम दुःखों से मुक्त हो सकते हैं। नेपाल से अन्तरराष्ट्रीय धर्मगुरू आचार्य कर्मा तानपाई ने अपने संबोधन में कलियुग को अज्ञान अंधकार का समय कहते हुए कहा, कि ऐसे समय पर ही वास्तव में ज्ञान सूर्य परमात्मा के दिव्य अवतरण की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, कि अपने वास्तविक स्वरूप की अनविज्ञता ही वास्तव में दुःखों का मूल कारण है। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग, भारत सरकार के पूर्व अध्यक्ष जस्टिस ईश्वरैया ने कहा, कि गीता हमें अहिंसा परमों धर्म की प्रेरणा देती है। गीता को उसके सही संदर्भ में जानने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम मे बोलते हुए डा. नागेन्द्र, उनके साथ बीके ऊषा एवं बीके बृजमोहन।

गीता का सही अर्थ जानें

कार्यक्रम के मुख्य संयोजक राजयोगी बृजमोहन ने संगोष्ठी के मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा, कि गीता के सही अर्थ को न जानने के कारण ही आज मानव असमंजस है। उन्होंने कहा, कि अगर हम गीता के सही महत्व को जान जाएं तो विश्व में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ सकता है। ओआरसी की निदेशिका बीके आशा ने कार्यक्रम में आए मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा, कि आप जैसे महान एवं प्रबुद्ध जन ही गीता के असली रहस्य को लोगों तक पहुंचा सकते हैं।

सभी विषयों पर जताई सहमति

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय, माउण्ट आबू से पधारी गीता स्कॉलर राजयोगिनी उषा एवं जबलपुर से भगवद् गीता की व्याख्याता डॉ. पुष्पा पाण्डे ने भगवद्गीता विषय पर देश के अनेक प्रान्तों से आए हुए गीता विशेषज्ञों से विचार-विमर्श किया। सभी ने इस विषय पर सहमति जताते हुए कहा, कि वास्तव में गीता में वर्णित युद्ध कोई भौतिक नहीं अपितु मन का अन्तर्द्वन्द है। सभी ने स्वीकार किया कि गीता का ज्ञान परमात्मा शिव ने कलियुग के अन्त में सतुयुगी दुनिया की स्थापना के लिए दिया। सभी ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था द्वारा दी जा रही आध्यात्मिक शिक्षा एवं राजयोग ध्यान को परमात्मा के द्वारा दिए जा रहे वास्तविक गीता ज्ञान व योग का व्यवहारिक स्वरूप कहा।

इनकी रही उपस्थिति

संगोष्ठी में विशेष रूप से उत्तराखण्ड संस्कृत विश्व-विद्यालय हरिद्वार के पूर्व उप-कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल, श्री जगतनाथ संस्कृत विश्व-विद्यालय के पूर्व उपकुलपति प्रो. अलेख चन्द्र सारंगी, कुरूक्षेत्र संस्कृत विश्व-विद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रमुख डॉ. एस. एम. मिश्रा, उत्कल विश्व-विद्यालय के पूर्व उप-कुलपति प्रो. बिनायक रथ, न्यू दिल्ली टाइम्स की प्रमुख संपादक डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव, दिल्लीउर्दू प्रेस कॉलम के लेखक मुजफ्फर हुसैन एवं अन्य उपस्थित थे।

अमृतसर

जवानों को रक्षा सूत्र बांधते हुए बीके बहनें।

मुरादाबाद

युपी - मुरादाबाद के मेयर विनोद अग्रवाल को राखी बांधते हुए बीके आशा ।

लश्कर

ग्वालियर- मध्यप्रदेश के राजस्व, खनन, प्रौद्यिगिकी एवं विज्ञान मंत्री उमाशंकर गुप्ता को राखी बांधते हुए बीके आदर्श।

सभी धर्म की एक ही शिक्षा सबका भगवान है एक

शिव आमंत्रण, टीटागढ़। वेस्ट बंगाल के टीटागढ़ में ईद मिलन कमेटी द्वारा ईद मिलन समारोह मनाया गया जिसमें विधायक मधुसूदन घोष, ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से श्याम नगर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कमला, बौध्द धर्म से वेन रतन ज्योति महासतवीर, क्रिश्चन धर्म से फादर आर. टी. रेव अरविंद मंडल, हिंदु धर्म से नित्यरूपानंद महाराज, ईस्लाम से जेबी मौलाना शाहिद हसन मिसबाही, सीख धर्म से सरदार गुरूमुख सिंह गांधी और रविंदर सिंह तथा जैन धर्म से राकेश जैन सहित शहर के अन्य वरिष्ठ लोग मौजूद थे। इस अवसर पर बीके कमला ने सर्व आत्माओं के पिता निराकार परमात्मा का परिचय देते हुये कहा, कि हम सब ईश्वर की संतान है, हम सबका रचियता एक ईश्वर है जिसे हम अल्लाह, गॉड, भगवान व एक ओंकार के नाम से पुकारते हैं, वह इस समय स्वयं आकर एक धर्म एक राज्य की स्थापना करने का दिव्य कार्य कर रहे हैं। सीख धर्म से सरदार गुरूमुख सिंह गांधी ने कहा, अगर सभी अपने साथ साथ एक दूसरे को समझने लगेंगे तो शांति जीवन मे आ सकती है। ईस्लाम से जेबी मौलाना शाहिद हसन मिसबाही ने कहा, कोई भी धर्म या भगवान लडना नही सिखाता। मनुष्य ही उनकी बातों को ना समझकर अल्लाह के नाम पर मारपीट और गलत काम कर रहा है। तो हमे उसके मेसेज को सही तरीके से समझकर पालन करना होगा।

ईद मिलन समारोह मे बोलती बीके कमला।

सम्पादकीय

अखिर किस युग में मरेगा रावण

रामायण और पुराणों में हम रावण के बारे में पढ़ते सुनते आये है। यह हमने मान भी लिया है कि रावण हमारे मनुष्यता का दुष्मन है। समस्त मानव जाति को दानव की जाति बना देता है। उसके स्वभाव संस्कार और कर्म आसुरी प्रवृत्ति के होते है। जिससे वह हर किसी को दुख देता है। राम रावण की लड़ाई, उसका वध और फिर रामराज्य की दुनिया वगैरह-वगैरह। हमारी प्राचीन परम्परा के चलते हम प्रतिवर्ष उसका प्रतीक एफीजी बनाकर जलाते आये है। ये हमने मान लिया है कि हमारे जलाने से वह मर जाता है। परन्तु एक बात पर हम लोगों को जरूर सोचना चाहिए कि आखिर रावण का रंग, रूप, कर्म, धर्म क्या था। मैं इसलिए कह रहा हूँ ताकि हम रावण को अपने आस-पास आ जाये तो पहचान सकें। यदि उसके व्याख्यानुसार जाये तो वह कामी, क्रोधी, पापी, अपराधी, मांस-मदिरा, शराब का भक्षण करने वाला था। सीता जैसे पवित्र नारी का अहपरण किया था। यदि आज उसी पैमाने को परखने का प्रयास करें तो क्या आज रावण हमारे बीच नहीं है? वे लोग जो मांस मदिर का भक्षण करते है, कामी, क्रोधी, लालची, अत्याचारी, पापी हैं। क्या ये रावण के लक्षण नहीं है। फिर हमें किस रावण को जलाने का प्रयास करना चाहिए। वास्तव में मनुष्य के अन्दर व्याप्त काम, क्रोध, लोभ, मोह समेत आसुरी गुण ही मनुष्य को रावण की संज्ञा देते हैं। शायद यही वजह है कि एफीजी जलाने के बाद भी रावण का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। परमात्मा शिव ने हमें अन्दर के रावण की पहचान और शक्ति दी। जिससे हम अपने आप को, रावणी संस्कार को पहचान कर उसे समाप्त कर सकें। यही दशहरा का सही मायने में अर्थ है।

मेरी कलम से

मैं कौन हूँ, मेरा यहां आने का मकसद क्या है इसे समझने की जरूरत

सुरेश प्रभु, केन्द्रीय रेलमंत्री

बहुत सारा वक्त हम दूसरों को देखने मे, कई बार दूसरों की सुंदरता निहारने में और गलतियों को लेकर उनकी आलोचना करने मे गुजारते रहते है। इसके कारण हमारा अमूल्य वक्त दूसरों को समझने मे और दूसरों को देखने में ही जाता है। दूसरों को बिना समझे हम अपनी राय देते है और अपने को सुधारने के लिए कभी वक्त नहीं देते। हर एक आदमी का जन्म कुछ कारणवश होता है। हर एक का कारण अलग-अलग होता है। हर एक के जन्म का कारण अगर एक ही होता तो प्रकृति ने इतने लोगों को जन्म नहीं दिया होता। हर एक व्यक्ति अपने अस्तित्व का कुछ अद्वितीय कारण लेकर इस सृष्टि पर आया है यह हमे मालूम ना हो तो समझ लो दूसरों को देखने में और खुद को नजर अंदाज करके हम बिना मतलब अपना वक्त गवां रहे है। हम अपने भीतर झांक के देखेंगे तो हम जान सकेंगे की हमारा जन्म किसके लिए हुआ है। कोई किताब पढ़ के हम अपने जन्म का कारण समझ नही पायेंगे। जिन्होने किताब लिखा है वह खुद को समझकर लिखा है। उनका लिखा किताब पढ़कर हम उनको समझ सकेंगे खुद को नहीं। तो मेरे बारे में मैं कैसे जानू? यही मेरे पूछताछ की शुरूआत है। मुझे जो कुछ समझ मे आयेगा वह कुछ अलग ही होगा। सबसे पहले मुझे मैं यहां क्यों हूं इसकी खुद से पूछताछ करने की जरूरी है। खुद की पूछताछ करना यही मेडिटेशन है। आत्मा, मन और शरीर को एक लाइन में लाने का प्रयास करो और साथ ही खुद का आत्मावलोकन करो, खुद को समझो। और यही खुद के बारे मे ज्यादा समझने के प्रक्रिया की शुरूआत है। मैं कौन हूं, मेरा यहां ने का मकसद क्या है यह समझने के बाद मैं अपना मार्गदर्शन सही रीति से करूंगा। आज तक मैं मेरे पिताजी ने जो कुछ बताया, मेरे फ्रेंडस् ने जो बताया या मेरे पड़ोसी ने जो बताया उसके अनुसार ही चल रहा था। लेकिन मुझे जो चाहिए, जिस मकसद के लिए मैंने जन्म लिया है वह मैं नहीं कर रहा हूं। गौतम बुद्ध को कई बरसों की तपस्या के बाद सत्य का पता चला। इसलिए तपस्या ये साधारण बात नहीं है। साधना या तपस्या कल के लिए मुझे प्रबोधन भी हो सकता है या कितनी साधना करने के बाद हम खाली हाथ भी रह सकते है। ब्रह्माकुमारीज में एक अच्छी बात सिखाई जाती है और वह है खुली आंखों से मेडिटेशन करना। यह किसके लिए यह मुझे मालूम नहीं लेकिन शायद खुली आंखों से बुद्धि का दरवाजा अच्छी तरह से खुलता होगा। किसी रास्ते पर आप चल रहे हो तो वह खुद को पहचानने की शुरूआत है। ब्रह्माकुमारीज शानदार सेवा कर रही है और निश्चित तौर पर मैं कह सकता हूँ कि समाज का अच्छा मार्गदर्शन कर रही है।

जिंदगी संवार देती है सकारात्मक ऊर्जा

बीके शक्ति

Mind Power

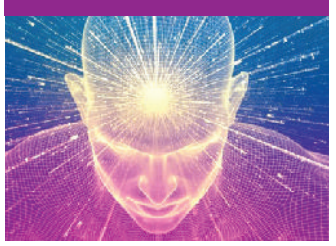

यहां मेरा एक सवाल है, बहुत आसान होता है यह बोलना, क्योंकि जब भी कोई नेगेटिव थॉट आता है तो वह एक सीरीज में आता है ऐसे में अगर हम उस चीज को रोकने की भी कोशिश करें जैसे कहा जाता है किसी बांध के पानी को अगर रोका जाए और फिर उसे छोड़ दिया जाए तो वह तूफान भी बन सकता है तो ऐसे में नेगेटिव थॉट को जितना रोकेंगे वह उतनी ही ज्यादा बढ़ेगी तो ऐसे में कैंसिल बोलने से तो मुझे नहीं लगता कि वह पॉसिबल है क्या आप कोई और तरीका बता सकते हैं?

कैंसिल के बाद जैसे मैंने दुसरा वर्ड बोला है रिप्लेस। आपने कैंसिल कमांड दी उससे नहीं रुक रहा है नेगेटिव थॉट। तो हम नेक्स्ट कमांड में जाएंगे वह है रिप्लेस। रिप्लेस यानी रिप्लेसमेंट यदि यहां पर एक आजतक चैनल चल रहा है हम आज तक नहीं देखना चाहते तो हम रिमोट का बटन दबाते हैं और चैनल को बदल लेते हैं। उसी प्रकार हमारे माइंड में जब नेगेटिव चल रहा होता है तो उसे पॉजिटिव थॉट में बदल देना शुरू करें। नेगेटिव के बारे में नहीं सोचें। हमें अपनी थॉट को चैनलाइज करना है जैसे ही हम अपनी थॉट को चैनलाइज करते हैं, हमारी संस्था की परम पूज्यनीय दादी गुलजार जी कहती हैं कि आपको नेगेटिव थॉट को टर्न करना है चैनलाइज करना है जैसे ही हम पॉजिटिव सोचना शुरु करेंगे ऑटोमेटिकली नेगेटिव थॉट बंद हो जाती है। मैं एक उदाहरण से स्पष्ट करता हूँ जैसे गंदे पानी का एक बहुत बड़ा टैंकर भरा हुआ है आपको उसमें अच्छा पानी भरना है। अब आप क्या करेंगे? उसमें अच्छा पानी भरना शुरू कर देंगे एक क्षण ऐसा आएगा जब उसमें से सारा गंदा पानी बाहर निकल जाएगा और उसमें सिर्फ अच्छा पानी ही रह जाएगा। जैसे मैं आपको कहूँ कि आपको बंदर के बारे में नहीं सोचना है, तब बंदर का थॉट सबसे पहले आपके दिमाग में आएगा। हमें नेगेटिविटी को डिस्टर्ब नहीं करना है। हमें पॉजिटिविटी के बारे में सोचना है। ऑटोमेटिकली रिप्लेस करना है अपनी नेगेटिविटी को। तो जैसे ही हम रिप्लेस कमांड यूज करते हैं डेफिनेटली हम नेगेटिव को पॉजिटिव में बदल सकते हैं।

लेकिन कई बार ऐसा होता है कि पॉजिटिव थॉट उस वक्त तो नहीं आते जिस वक्त नेगेटिविटी होती है क्योंकि हम पूरी तरह से डायरेक्शनलैस हो जाते हैं। जब नेगेटिव थॉट्स आते हैं ऐसे में उस मोमेंट पर हमें पॉजिटिव थॉट्स याद भी आए यह मुश्किल होता है तो ऐसे में याद रखना कि नहीं मुझे तो कैंसिल कर के पॉजिटिव थॉट्स को भरना है तो ऐसे में कौन सी ऐसी टेक्निक है जिससे हमें याद आ जाए कि हमें पॉजिटिव थॉट्स सोचना है या फिर नेगेटिव थॉट सोचना है?

जैसे ही हम सुबह उठते हैं हमारा सबकॉन्शिस माइंड एक्टिवेट होता है। तो हम सबसे पहले अपने सबकॉन्शिस माइंड को कमांड दे दे, कि आज मैं पावरफुल हुँ। मैं एक जीनियस हूँ। मेरा आज का दिन बहुत अच्छा जाएगा। सब कुछ ठीक चल रहा है। मेरा भविष्य उज्जवल है। तो हम अपने दिमाग में 5 कुछ ऐसे पॉजिटिव इंजेक्शन अपने सबकॉन्शिस माइंड के अंदर डाल दें। हम ऐसी इंफॉर्मेशन को यूज करेंगे कि दिनभर वह थॉट हमारे लाइफ को ड्राइव करें। नहीं तो होता क्या है कि कहते हैं ना कि किस का चेहरा देख लिया ऐसी बात सोच लो दिन भर उसका इफ़ेक्ट होता है। तो हम हर जगह जहां पर भी हम रहते हैं वहाँ पर पॉजिटिव थॉट्स को फिक्स करें। बार-बार हम अपने सबकॉन्शियस माइंड जो हम कंप्यूटर यूज कर रहे हैं, जो लैपटॉप यूज़ करते हैं, जो मोबाइल यूज़ करते हैं उसमें वॉलपेपर यूज करें जो पॉजिटिव थॉट दे ताकि सबकॉन्शिस माइंड में पॉजिटिव थॉट जाते रहे और वह हमें चैनलाइज करते रहे।

. . . क्रमश

नई रिसर्च में दावा, एक्सरसाइज से शरीर और मन स्वस्थ रहता है

कई कारणों से महत्वपूर्ण हैं शारीरिक गतिविधियां:
ताकत बढ़ती है, मसल्स मजबूत होती है, मूड खुशनुमा रहता है

1: आपको हर दिन की जरूरत नहीः-
अमेरिका में हर सप्ताह 150 मिनट की मध्यम एक्सरसाइज की गाइडलाइन जारी की गई है। अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन की पत्रिका में प्रकाशित रिसर्च में बताया गया है, सप्ताह में एक या दो दिन अधिक एक्सरसाइज कर वैसे ही फायदे पाए जा सकते है जो नियमित कसरत से मिलते है। यूरोप में 63000 लोगों के सर्वे से पता लगा कि सप्ताह में एक या दो दिन 150 मिनट की एक्सरसाइज से मौत का खतरा उन लोगों की तुलना में 30 से 34 प्रतिशत कम हो गया जो निष्क्रिय रहें। सप्ताह के ज्यादातर दिनों में एक्सरसाइज करने वाले लोगों के मरने का खतरा 35 प्रतिशत तक कम पाया जाता है। यह उन लोगों के समान है जिन्होने अक्सर कसरत नही की।

2: योग आपके जीन्स को बदल सकता है।
फ्रंटियर्स इन इम्यूनोलॉजी पत्रिका में प्रकाशित नई रिसर्च ने दर्शाया है, योग और ध्यान से कमजोर सेहत और अवसाद से संबंधित जीन्स में परिवर्तन हो सकते है। ध्यान, योग, ब्रीदिंग एक्सरसाइज और ध्यान की चीनी क्रिया गिगोंग एवं ताई ची के जैविक प्रभावों पर प्रकाशित 18 अध्ययनों के विश्लेषण से शोधकर्ताओ ने पाया कि दिमाग और शरीर की ये एक्सरसाइज शरीर में जलन, सूजन बढ़ाने वाले जीन्स की गतिविधि को शांत कर देती है। जब तनाव
मांसपेशियों को बड़ा करने और हड्डियों को मजबूत बनाने में स्ट्रेंग्थ सबसे उम्दा एक्सरसाइज है। इससे टाइप-2 डायबिटीज, दिल की बीमारियो सहित कई रोगों का खतरा कम होता है। एक नई स्टडी से अनियंत्रित को जाए तो इनप्लेमेशन शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को क्षति पहुंचाया है। जो लोग ध्यान, योग नियमित रूप से करते है, उनमें इनप्लेमेशन के जैविक लक्षण कम होते है। विरासत में मिले जीन्स स्थिर नहीं है और डीएने की गतिविधि मानवीय नियंत्रण पर निर्भर करती है।

3: स्ट्रेंग्थ ट्रेनिंग से बेहतर होगा शरीर
पता लगा है, जिन महिलाओं ने ताकत बढ़ाने वाली एक्सरसाइज की उनमें टाइप-2 डायबिटीज का खतरा 30प्रतिशत और दिल की बीमारियो का खतरा 17प्रतिशत कम पाया गया है। स्ट्रेंग्थ ट्रेनिंग का एकमात्र तरीका पावरलिफ्टिंग ही नही है। हाथ पैरों से वजन उठाने जैसे तरीकों से फैट कम कर सकते हैं और हड्डियां ठोस हो सकती हैं।

4: तनावरहित हो जाता है दिनभर का काम
हर दिन काम के दबाव को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका एक्सरसाइज है। ऑक्यूपेशनल हेल्थ साइकोलॉजी पत्रिका में प्रकाशित एक स्टडी के अनुसार 15 मिनट पैदल चलने से लोगों को काम पर अधिक फोकस करने मे मदद मिली। दिन के अंत में उन्होने ज्यादा थकान महसूस नहीं की। शोधकर्ताओ ने 100 कामगारों को अपने लंच के रूटीन में दस दिन तक बदलाव करने के लिए कहा। उनमें से आधे लोगों ने खाना खाने के बाद पास ही एक पार्क में 15 मिनट चहलकदमी की। दूसरे ग्रुप ने ऑफिस के अंदर गहरी सांस लेने और मानसिक एकाग्रता जैसी एक्सरसाइज की। दोनो ग्रुप के लोगो ने बताया, उन्होने तनाव कम महसूस किया। रिसर्च बताती है, रोज अधिक कैलोरी खर्च करने वाले काम से जुड़े तनाव और गुस्से को घर नही ले जाते है।

5: दौड़ने से घुटने भी मजबूत होते हैं
ऐसी धारणा है कि लंबे समय एक दौड़ने से जोड़ों में दर्द, गठिया, घुटनों में कमजोरी और कई अन्य समस्याएं हो सकती है। लेकिन एक स्टडी में पाया गया है, थोड़ी बहुत दौड़ने से घुटने के जोड़ में इनप्लेमेशन कम हो गया। एप्लाइड फिजियोलॉजी जर्नल मे प्रकाशित रिपोर्ट मे बताया गया है, ब्रिघम यंग यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओ ने 18 से 35 स्वस्थ दौड़ाकों को लैब में ट्रेडमिल पर 30 मिनट तक दौड़ाया। दौड़ने से पहले और बाद मे उनके खून और घूटने के द्रव के सैम्पल लिए गए। जांच से पता लगा कि 30 मिनट दौड़ने के बाद इनप्लेमेशन में कमी आई।

दादी जानकी

फरिश्ता समान स्थिति हो तब होगी सेवा में सफलता

बाबा की हम बच्चों में उम्मीदें हैं कि मेरे बच्चे ऊँच पद पाये इसलिए तो बाबा हमको मेहनत से पढ़ाते हैं, बाबा हमारे ऊपर ध्यान देते हैं। बाबा अपनी तरफ ध्यान खिचवाते हैं, वो मुख से भले ज्ञान सुनाने में होशियार हो लेकिन योगी के चिन्ह उनमें नहीं होगा। ज्ञानी कभी बेचैन हो सकता है, योगी कभी बेचैन नहीं हो सकता है। जो बाबा ने अमुल्य रत्न दिये हैं उनको दिल में अच्छी तरह से समाने से वो फिर दिल से निकल नहीं सकते हैं। तो उसका फायदा ये होता कि जो काम की बात नहीं है वह दिल का नाजुकपना छुट जाता है।

◆ज्ञान योग को व्यावहार में यूज करो

हमको मायाजीत, जगतजीत बनने के लिए सर्वशक्तिवान बाबा से शक्ति चाहिए। वह शक्तियाँ इमर्ज तब होंगी जब ज्ञान और योग को व्यावहार में यूज करेंगे। कहा जाता है- राज्य करने के लिए भी शक्ति चाहिए। रिलीजन इज माइट। अगर हमारे में शक्ति नहीं हैं तो राज्य कैसे करेंगे, प्रजा में आयेंगे। राज्य के अधिकारी बनने के लिए अब धर्माऊ युग में पुरूषार्थ करना है। और सभी युग में पुरूषार्थ करते हैं लेकिन वह टाइम उतरती कला का है, चढ़ती कला का समय अभी है। लायक बनने का टायम यह है। लायक बनूँ तो कैसा? साधारण नहीं, ऐसा वैसा नहीं। ये भी अन्दर में निश्चित हो कि मुझे बनना क्या है तब तो शक्ति आयेगी। जैसे भक्ति में कोई एम आब्जेक्ट नहीं है, ब्रह्म तत्व है कोई भगवान तो नहीं है। विकर्म भी विनाश नहीं हो सकते हैं। भल हठयोग भी करें लेकिन वो मेरा बाप है, ये थोड़े ही समझा हैं तो पाप भस्म नहीं हो सकते हैं। अभी बाबा क्यों कहते मेहनत करो? योगयुक्त होने में मेहनत है। लेकिन इसके महत्व को अच्छी तरह से जानने कि, शान्ति में कितनी शक्ति है।

◆अन्तर चित को शान्त रखो

शान्ति से कोई बुद्ध नहीं बनते हैं। आप अन्तर चित को शान्त रखो, बुद्धि में कोई भी दूसरी बातें होंगी तो एकाग्रचित हो नहीं सकते। योग भी सहज नहीं लग सकता। इसलिए कहते हैं-योग सहज ते सहज भी है और मुश्किल से मुश्किल भी है।

योग में बैठते हैं तो कोई न कोई बात याद आ जाती है। मनमनाभव होकर बैठते हैं तो मध्याजी भव सामने आना चाहिए ना। मनमनाभव क्यों हुए? मध्याजी भव को सामने रखा। मेरी एम है विष्णु समान बनने की। चार अलंकार हमारे हैं। ब्रह्मा मुख वंशावली हूँ, ब्रह्मा ही विष्णु है और मैं विष्णु वंशी हूँ। विष्णु के गले का हार बनना है। एम आब्जेक्ट सामने हो तब हमारे नैन-चैन ऐसे बनेंगे। ब्रह्मा मुख वंशावली श्रेष्ठ ब्रह्मणों को सेवा का बहुत शौक है।

◆सदा सफलता मुर्त बनो

सच्चे सेवाधरी समझेंगे कि हमारी फरिश्ता समान स्थिति होगी, कभी हल्का, कभी भारी होगी, किसी देहधारियों पर हमारा ध्यान होगा, विदेही रहने की स्थिति नहीं होगी तो न पुरूषार्थ में सफलता, ना सेवा में सफलता। सफलता खुशी देती है। बाबा वरदान देते हैं- सदा सफलता मुर्त बनो। तो थोड़े समय के लिए सफलता मूर्त नहीं बनना है। बाबा कहते हैं तुम सच्चे स्नेही, सहयोगी होकर रहेंगे तो सफलता तुम्हारे समाने छिम-छिम करके आयेगी। जैसे लक्ष्मी छिम-छिम करके दीवाली पर आती है। आहान करते समय दिल की सच्ची भावना है, सफाई है एकदम। तो छिम-छिम करके सामने आती है। तो ज्ञानसरोवर बना, शान्तिवन बना सबकी सच्चाई से। दादी में मैंपन का अभिमान नहीं, दादी कहती मेरा कुछ नहीं। बाबा की सेवा है और बाबा के बच्चे हैं। दुनिया में कैसा भी कोई चर्च हो, मन्दिर हो उसमें भी धर्म भेद होगा। यहाँ तो बाबा बाहें पसार कर हर बच्चे को कहता है- आओ मेरे बच्चे। कहाँ पर भी यह भावना नहीं आ सकती कि आओ मेरे बच्चे आओ, मैं तुमको मीठा बनाऊं। अशान्त आत्माओं को बाबा क्या बनाता है? शान्त और शीतल।

◆अन्तर्मुखी रहेंगे तो सुखी रहेंगे

हम आपस में प्रेम से रहें, कोई स्वार्थ, कोई कामना न हो। हर एक अपनी घोटे तो नशा चढ़े। पुरूषार्थ करेंगे तो अच्छा पद पायेंगे। अन्तर्मुखी रहेंगे तो सुखी रहेंगे। ये अच्छा कन्डीशन है जो करता है वो पाता है। भले घर मिला, ज्ञान मिला.. परन्तु खुद का कल्याण करने के लिए खुद को ही ध्यान देना होगा। और जितना करते जा रहे हैं समझते हैं आगे बढ़ते जा रहे हैं। अगर कहाँ रूके हैं तो कोई ने रोका नहीं है, हम खुद रूके हैं। तो इतना प्यार का, बाबा की शक्ति का अनुभव नहीं कर सकते हैं। फिर फैमिली अपनी नहीं लगती हैं। लगता है सब मुझे दु:ख ही देते है। अरे, सब सुख शान्ति दाता के बच्चे है, शान्ति सुख देने वाले हैं, तुम भी सुख शान्ति देने वाली बन जाओ तो तुमको सब सुख शान्ति देने वाले दिखाई देंगे। परन्तु आंखे ऐसी हैं जो सब दुख देने वाले ही दिखाई देते हैं। ... क्रमश

दूसरा कदम है- परमधाम की यात्रा करना

राजयोग में आध्यात्मिक यात्रा के तीन कदम

बीके उषा, वरिष्ट राजयोग शिक्षिका, माउंट आबू

परमात्मा के सानिध्य की ओर हम अपने मन को ले चलते हैं। जैसे ही हमारा मन देहधारियों एवं देह की दुनिया की सभी बातों से अनासक्त होकर आत्मा स्वरूप में स्थित होता है, वैसे ही परमात्मा की याद में मन को एकाग्र करना सहज हो जाता है। जिस तरह जब दो तारों को जोड़ना हो, तो सबसे पहले दोनों तारों के ऊपर का बिजली अवरोधक रबर उतारना पड़ता है। तब दोनों तारों को जोड़ने से करंट चालू होता है। इसी प्रकार परमात्मा से सर्वशक्तियों की करंट प्राप्त करने लिए परमात्मा से भी मन का तार जोड़ना पड़ेगा परन्तु परमात्मा पर कोई आवरण का रबर नहीं हैं लेकिन मनुष्यात्मा पर देहअभिमान का आवरण, देह के सम्बन्धों के मोह का आवरण और देह के पदार्थो की आसक्ति का आवरण रूपी रबर चढ़ा हुआ है। इसलिए न तो परमात्मा से संबंध जुट पाता है और न ही शक्तियों की ऊर्जा प्राप्त हो सकती है। जब पहले कदम के द्वारा हम मन को आत्मा स्वरूप में स्थित करने से सारे आवरणों को एक-एक करके उतार देते हैं तब परमात्मा के साथ सम्बन्ध जोड़ना आसान हो जाता है। परमात्मा की स्मृति से हमें परमात्मा से सर्व शक्तिया प्राप्त होती है और क्षीण ऊर्जा वाली आत्मा शक्तियों और गुणों से भरपूर हो जाती हैं। परन्तु यहाँ सवाल पैदा होता हैं कि क्या ऐसे हमारी आत्मा रूपी बैटरी चार्ज हो सकती है?

यदि होती है तो उसका क्या प्रमाण है? कहीं यह एक कल्पना तो नहीं कि बैटरी चार्ज हो रही है लेकिन वास्तव में कुछ न हो रहा हो। इसे स्पष्ट करने के लिए बैटरी चार्ज होने की प्रक्रिया को समझना होना।

जिस प्रकार आज की भौतिक दुनिया में रिचार्जेबल बैटरीय आती हैं। जिन्हें फिर से चार्ज करके उपयोग में लाया जाता है। चार्ज करने के लिए बैटरी को चार्जर में रख कर उसे ऊर्जा के स्त्रोत के साथ जोड़ना पड़ता है। जब बैटरी को करेंट मिलता है तो वह पुन: चार्ज हो जाती है। जब बैटरी के डिसचार्ज और रिचार्ज के पीछे विज्ञान का सरल सा तर्क यही होता है कि जब बैटरी के अन्दर के

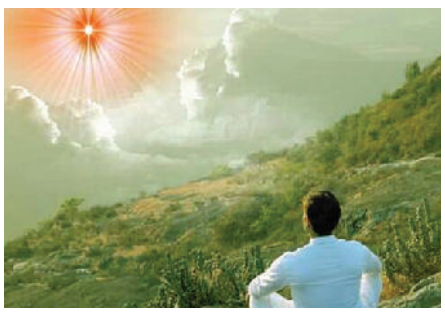

रासायनिक अवयव पूर्ण रूप से अव्यवस्थित हो जाते हैं तो कहा जाता हैं कि यह बैटरी डिस्चार्ज हो गई। फिर उसको चार्जर में रखना पड़ता है, लेकिन चार्जर में रखने से वह अपने आप चार्ज नहीं होती। इसके लिए उसको बिजली के स्त्रोत के साथ जोड़ते हैं तो उसमें विद्युत प्रवाह इन स्थूल नेत्रों से दिखाई नहीं देता। जैसे ही विद्युत शक्ति का प्रवाह मिलता है वैसे ही जब बैटरी के अव्यवस्थित रसायन पुन: व्यवस्थित हो जाते हैं तो बैटरी चार्ज हो जाती है। इस प्रक्रिया में चार्जर की क्षमता के आधार पर कुछ समय अवश्य लगता है।

ठीक इसी प्रकार आज के युग के अन्दर आत्मा की बैटरी भी डिस्चार्ज हो गई है। उसका प्रमाण यह है कि आज कल छोटी-छोटी बातों में चिड़चिड़ापन अथवा तनाव आ जाता है, किसी ने कुछ कहा तो सहन नहीं होता तो फिर बहुत गुस्सा आने लगता है। व्यक्ति अपने आप पर अंकुश नहीं रख पाता है। कभी ईर्ष्या आ रही है, कभी द्वेष आता है, कभी कोई उल्टी-सीधी नकारात्मक बातें आती हैं। तभी तो व्यक्ति अपने आप से परेशान सा होने लगता है। वह सोचता है कि पहले तो ऐसे नहीं होता था। आजकल ऐसे क्यों होता है कि मुझे गुस्सा बहुत जल्दी आ जाता है। आत्मा की इस कमजोरी के परिणाम स्वरूप आत्मा की तीनों शक्तियों- मन, बुद्धि और संस्कार में ताल-मेल बिगड़ जाता है। अत: व्यक्ति जो सोचता है वह बोल नहीं पाता और जैसा बोलता है वैसा कर नहीं पाता। जब इस प्रकार का अंतर्द्वद्व चलता है तो आत्मा का विश्वास कम होने लगता और हताशा बढ़ने लगती है। इन सभी लक्षणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि आत्मा रूपी बैटरी डिस्चार्ज अर्थात कमजोर हो गई है।

राजयोग वह माध्यम है जिसके द्वारा आत्मा का परमात्मा के साथ यदि ठीक कनेक्शन जुड़ जाता है तो स्वत: ही सर्वशक्तियों की ऊर्जा मिलती है। सर्वशक्तियों की प्राप्ति जीवन में सदा खुशियों का अनुभव कराती है। राजयोग मेडिटेशन का यह मतलब कदापि नहीं कि जब हम ध्यान मे बैठेंगे तो हमारी आँखों को कुछ दिखाई देने लगेगा। कई लोग सोचते हैं कि जैसे ही हम मेडिटेशन में बैठेंगे तो भगवान की आकृति दिखाई देगी। ... क्रमश

छतरपुर

महर्षि वेद विज्ञान विद्यापीठ छतरपुर के प्राचार्य ओम प्रकाश शर्मा को राखी बांधते हुए बीके रीणा

फर्रूखाबाद

सदाकत हुसैन मौलाना , एसएसपी दयानन्द मिश्र, श्री श्री 1008 स्वामी महेश योगी महाराज को राखी बांधती हुई बीके मंजु एवं बीके रजना ।

गोरखपुर

एसएसबी जवान को राखी बांधती हुई गोरखपुर सेन्टर इन्चार्ज बीके पुष्पा बहन।

असंध, हरियाणा

असंध के विधायक सरदार बख्शीश सिंह विरक को राखी बांधते हुए बीके नीलम एवं साथ में असंध सेवाकेन्द्र की संचालिका बीके उषा ।

रेशम के धागों में एकता और पवित्रता का बंधन

वैसे तो रक्षाबन्धन का त्योहार पूरे देश में धूमधाम से मनाया गया। बहनों ने भाईयों के कलाई पर राखी बांधी। परन्तु ब्रह्माकुमारीज संस्थान में राखी का अलग ही रूप दिखा। पवित्रता के बंधन ने विश्व शांति, विश्व बंधुत्व, वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश दिया। हम शरीर नही है आत्मा है और आत्मिक स्वरूप मे हम सबका पिता, मालिक एक ही है और उसका नाम है परमपिता परमात्मा। उसकी स्मृति में नेताओं, अभिनेताओं को राखी बांधकर संदेश दिया।

दिल्लीः भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से ओआरसी की निदेशिका बीके आशा, मजलिस पार्क सेवाकेंद्र प्रभारी बीके राज, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सविता और बीके मंजू ने मुलाकात कर रक्षासूत्र बांधा और उनके अच्छे स्वास्थ की कामना की।

नई दिल्ली : नयी दिल्ली में बीजेपी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी को राखी बांधती बीके आशा। उनके साथ है मजलिस पार्क सेवाकेंद्र से बीके राज।

नई दिल्ली : ओआरसी की निदेशिका बीके आशा, लॉरेंस रोड सेवाकेंद्र प्रभारी बीके लक्ष्मी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सविता ने देश के पित मंत्री अरूण जेटली को रक्षाबंधन पर्व की शुभकामनाएं देते हुए रक्षा सूत्र बांधा।

काठमांडू : नेपाल के प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा को राखी बांधती बीके राज व अन्य।

नई दिल्ली : नई दिल्ली में ओआरसी की निदेशिका बीके आशा, लॉरेंस रोड सेवाकेंद्र प्रभारी बीके लक्ष्मी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सविता ने राज्य सभा के उप सभापति पीजे कुरियन से मुलाकात कर रक्षा सूत्र बांधा।

नई दिल्ली : नई दिल्ली में ओआरसी की निदेशिका बीके आशा, लॉरेंस रोड सेवाकेंद्र प्रभारी बीके लक्ष्मी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सविता ने देश के परिवहन मंत्री नितिन गडकरी को रक्षाबंधन पर्व की शुभकामनाएं देते हुए रक्षा सूत्र बांधा।

राजस्थान, जयपुर

राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को तिलक लगाती बीके चंद्रकला, साथ में बीके सुषमा।

दिल्ली

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मुलाकात कर राखी बांधती ब्रह्माकुमारी बहनें।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को राखी बांधती ब्रह्माकुमारी बहनें।

आंध्र प्रदेश

आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्राबाबू नायडू को राखी बांधती बीके पद्मजा, बीके राधा, बीके मानसा तथा अन्य।

गोवा

गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर पार्रिकर को राखी बांधती बीके शीला, साथ में बीके सुरेखा।

बिहार

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को रक्षा सूत्र बांधती बीके संगीता।

उड़ीसा

उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक को राखी बांधती बीके त्रिपुरा, बीके कविता।

रीवा

देवतालब के विधायक गिरीश गौतम को रक्षा सूत्र बांधते हुए बीके निर्मला।

दिल्ली

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री जे पी नड्डा को मजलिस पार्क सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके राजकुमारी ने राखी को पावनता का प्रतीक बताते हुए रक्षासूत्र बांधा।

नोएडा

नोएडा के सेक्टर-33 सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू एवं बीके ममता ने संस्कृति और पर्यटन मंत्री डॉ. महेश शर्मा को परमात्म संदेश दिया एवं राखी बांधी।

पटना

केन्द्रीय मंत्री रवि शंकर प्रसाद को रक्षा सूत्र बांधती बीके अनिता।

छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह से मुलाकात कर रक्षाबंधन करती इंदौर जोन निदेशिका बीके कमला।

दिल्ली

दिल्ली के लोधीरोड सेवाकेंद्र प्रभारी बीके गीरिजा ने श्रम और रोजगार राज्य मंत्री बंडारू दत्तात्रेय को पवित्र रक्षा सूत्र बांधा।

लखनऊ

लखनऊ में पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को राखी बांधती बीके राधा, साथ में बीके कोमल व अन्य।

पौड़ी गढ़वाल

कोठद्वार, उत्तराखण्ड के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सुरेन्द्र सिंह नेगी को राखी बांधते हुए बीके ज्योति।

बनारस

वाराणसी में रेल राज्य मंत्री मनोज सिन्हा को एकता व भाईचारे का प्रतीक राखी बांधती श्रीराम कालोनी सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके सरोज, बीके चन्दा तथा बीके ओएन उपाध्याय। इसके साथ ही केन्द्रियमंत्री महेन्द्र नाथ पांडेय को भी राखी बांधी गयी।

असम

असम के मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल को राखी बांधती बीके शीला। उनके साथ असम फाईनेंशियल कार्पोरेशन के चेयरमैन बीके विजय गुप्ता।

पांडिचेरी

पांडिचेरी की उप राज्यपाल डॉ. किरण बेदी से बीके कविता ने मुलाकात की और संस्थान की ओर से शुभकामनाएं देते हुए रक्षासूत्र बांधा।

पटना

रेलमंत्री सुरेश प्रभु को राखी बांधती बीके आशा एवं बीके सविता।

बीकानेर

केन्द्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल को राखी बांधते हुए बीके कमला।

मोतिहारी

बिहार सरकार के पर्यटन मंत्री प्रमोद कुमार को राखी बांधती हुई बीके वीमा एवं बीके डेंगी बहना।

हरियाणा

हरियाणा के राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी को चंडीगढ़ सेक्टर-33 ए की सेवाकेंद्र प्रभारी बीके उत्तरा ने आत्मिक स्मृति का तिलक लगाकर राखी बांधी। उनके साथ थे पंजाब जोन के निदेशक बीके अमीरचंद।

शिलॉंग

शिलॉंग में मेघालय के राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित को राखी बांधती हुई स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नीलम ।

कोलकाता

बिहार के राज्यपाल केशरी नाथ त्रिपाठी से कोलकाता के आशुतोष मुखर्जी रोड सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कानन ने मुलाकात की और पर्व की शुभकामनाएं देते हुए राखी बांधी।

छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल बलरामदास टण्डन से मुलाकात कर रक्षाबंधन करती इंदौर जोन निदेशिका बीके कमला।

उड़ीसा

उड़ीसा के राज्यपाल एस. सी. जमीर से मुलाकात कर राखी बांधती भुवनेश्वर यूनिट-9 सेवाकेंद्र की प्रभारी बीके गीता।

रांची

झारखंड की राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर ब्रह्माकुमारी बहनों ने आत्म स्मृति का तिलक लगा कर रक्षा सूत्र बांधे। इस अवसर पर मुर्मू ने विश्व कल्याण की कामना की।

राजयोग के ज्ञान ने बदली जीवन की राह

ब्रह्माकुमारी वजीहा बहन अभी सेवारत कुवैत हैं।

वजीहा अमेरिका के अरेबिक मुस्लिम परिवार में जन्मी और पली बढ़ी। अध्ययन का कार्य अमेरिका में ही हुआ। अमेरिका से ही मैनेजमेंट तथा इन्फार्मेशन सिस्टम में डिग्री पास की। मेरी एक बेटी एक बड़ा बेटा है। बेटा अमेरिका में प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक है। परन्तु आज कुवैत में एक सुप्रसिद्ध कामकाजी व्यवसायी महिला है। इसके साथ ही शैक्षणिक संस्थाओं की निदेशिका के रूप में संचालन कर रही है। सबसे पहले सन् 1999 में लिविंग वैल्यूज कार्यक्रम के दौरान ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्पर्क में आयीं। शैक्षणिक संस्थाओं की डायरेक्टर हैं। आपकी पढ़ाई अमेरिका में हुई है। परिवार में पति और बच्चे होने के बाद भी खालीपन लगता था।

मेरा बचपन था क्रान्तिकारी

मेरा बचपन ही क्रान्तिकारी एवं नियम तथा संयम वाला था। वही संस्कार ईश्वरीय जीवन चलाने में बहुत सहायक रहे। ईश्वरीय जीवन में मैं कभी न डगमगायी और न संशय में आयी। मुझे अपने पर पूरा भरोसा था कि मैंने ही खुद परमात्मा को ऑफर किया है, अपने को उसको अर्पित किया। वह मेरे साथ है तो मुझे किस बात का डर है। मैंने किसी बात सोचा नहीं, झट स्वीकारा और आगे बढ़ती गयी।

समाज में बढ़ रही स्वार्थपरकता

मैं इस संस्था से लिविंग वैल्यूज कार्यक्रम के द्वारा ही आयी। जब देखती थी कि समाज में रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी, स्वार्थपरता आदि बहुत बढ़ रही हैं। लोगों में तनाव, चिंता, दिशाहीनता, निराशा देखती थी तो लगता था कि लोगों के अन्दर मूल्य होने चाहिए। यूँ कहे कि मूल्याधरित समाज के निर्माण के लिए मैं मार्ग ढूँढ़ रही थी। सन् 1999 जुलाई में ऑक्सफोर्ड सिटी में मैं लिविंग वैल्यूज की ट्रेनिंग लेने गयी। जिस दिन वहाँ गयी उसी रात को मैं दादी जानकी जी से मिली। उनकी दृष्टि ने मुझे जगा दिया। सत्य की खोज, परमात्मा की खोज ने मुझे सबकुछ दे दिया।

समाज के लोग समझते थे सुखी महिला

समाज के लोग समझते थे कि मैं एक सफल तथा सुखी महिला हूँ, लेकिन मैं जानती थी कि मैं किसी महान् वस्तु से वंचित हूँ। मेरे में जो ईश्वर के प्रति भावनायें थीं, प्यास थी, खोज थी वे सजग हो उठी और मुझे अनुभव होने लगा, कि इस मार्ग द्वारा ही मेरी सभी आशायें तथा उम्मीदें पूरी हो जायेंगी। वहाँ मैंने एक विचित्र और दिल को छूने वाला सत्कार तथा वातावरण पाया। चार दिन के लिविंग वैल्यूज की ट्रेनिंग के बाद मैंने ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स किया। वापिस घर गयी ब्राह्मण बनकर। मैंने बाबा से कह दिया कि बाबा कुवैत में तो न कोई ब्राह्मण है न कोई सेन्टर। मैं तो आपकी बन चुकी हूँ, अब आप मेरी मदद करना, मार्गदर्शन देना। सच कहें तो यह एक दैवी चमत्कार ही था कि जब मैं घर पहुँची तब मुझ में बहुत परिवर्तन आ गया था। बहुत शांति अनुभव होती थी।

नाटकीय तथा अविश्सनीय परिवर्तन

बाकी मेरे लौकिक परिवार वाले लगभग 200 हैं। मेरे में जो शीघ्र नाटकीय तथा अविश्वसनीय परिवर्तन आया, उससे उनमें थोड़ी-सी हलचल उठी। उन्होंने थोड़ा हंगामा किया कि इसकी बुद्धि भटक गयी है, इसने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया है। मेरे में परिवर्तन धीरे-धीरे नहीं हुआ, बल्कि शीघ्र ही हुआ और एक विस्फोट जैसा हुआ। वे मेरी ग्लानि करते रहे, सारा दिन मेरी टीका-टिप्पणी करते रहे। परन्तु मुझे हमेशा अनुभव होता था कि बाबा मेरे साथ हैं और मेरी रक्षा कर रहे हैं। मैंने तुरन्त ही पवित्रता की धारणा की तो मुझे योग में बहुत ही खुशी तथा शक्ति का अनुभव होता था।

अचानक बदल गया मेरा जीवन...

शुरू में बच्चों को थोड़ी सी तकलीफ हुई क्योंकि मैंने जो भी किया एकधक से किया। जो भी छोड़ना था एकधक से छोड़ा। तो घर में थोड़ी सी हलचल हुई। मेरा बड़ा लड़का उस समय 16 साल का था। उसने मुझसे एक बार कहा कि मेरी मम्मी मर गयी। लेकिन पहले मैंने अपने में योगबल संग्रह किया, अपने को पक्का किया उसके बाद बच्चों को तथा पति को बाबा का परिचय तथा ज्ञान समझाया। धीरे-धीरे वे भी समझने लगे कि यह एक सर्वोत्कृष्ट मार्ग है। अभी मेरा बड़ा लड़का अमेरिका में प्रसिद्ध फिल्म डायरेक्टर है। उसकी उम्र केवल 22 वर्ष है। सबने यह देखकर अपना मूड चेंज कर लिया।

पति ने दिया सहयोग

मेरे पति उदार तथा सभ्य हैं, उन्होंने मुझे जीवन भर हर बात में समर्थन तथा सहयोग दिया। ईश्वरीय मार्ग पर चलने के लिए भी उन्होंने दिल से सहयोग दिया और दे रहे हैं। लौकिक जीवन में तो उन्होंने मेरी हर बात को प्यार से माना लेकिन यह जो ज्ञान में चलने की बात थी, इसमें दो बड़ी बातें थीं। एक थी धर्म की और दूसरी थी पवित्रता की। मैंने बाबा को ही कह दिया, कि बाबा मेरे पति को आप ही समझा देना। और मेरा सबकुछ सरल हो गया।

ईश्वरीय शक्ति ने कठिन से सहज कर दिया

मैं जिस देश में रहती हूँ वहाँ बी.के. जीवन बिताना बहुत कठिन कार्य है। परन्तु मैंने कभी मुश्किल का अनुभव नहीं किया। मैं परिस्थितियों से न कभी डरी, न हारी, न रोयी। हर समय मैंने बाबा की छत्रछाया तथा सहयोग का अनुभव किया और आगे बढ़ती गयी। मैं मुस्लिम देश में रहती हूँ लेकिन बाबा मेरी इतनी विचित्र रीति से रक्षा करते हैं कि मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता। कितने भी विघ्न आये पर मैंने थोड़ी भी न आशा छोड़ी, न हिम्मत हारी। आरम्भ में जितना नशा तथा जोश था आज भी उतना ही है। एक बूँद भी कम नहीं हुआ है।

हर कोई सीखे राजयोग

मैं तो कहती हूँ कि हर किसी को राजयोग ध्यान सीखना चाहिए। इससे पूरा जीवन ही बदल जाता है। राजयोग ऐसी चीज है जिससे पूरा जीवन बदल सकता है। स्त्री हो या पुरूष हर किसी को ज्ञान सुनना जरूरी है। क्योंकि ज्ञान के बिना जीवन अधूरी है।

नीमच

सीआरपीएफ के डीआईजी राजीव रंजन कुमार एवं काव की अध्यक्ष मोनालिका कुमार ने ब्रह्माकुमारी बहनों से रक्षा सूत्र बंधवाया।

हिसार , हरियाणा

नलवा के विधायक रणबीर सिंह गंगवा को राखी बांधती हुई बीके रमेश।

बेतुल, मप्र

बेतुल की सांसद ज्योति धुर्वे को रक्षा बंधन की शुभकामना दिया, साथ ही रक्षा सूत्र बांधते हुए बीकेपूर्णिमा बहन।

मुजफ्फरपुर

बिहार सरकार के नगर विकास व अवास मंत्री सुरेश शर्मा को राखी बांधते हुए राजयोगिनी बीके रानी दीदी।

पटना

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री एवं राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू यादव को राखी बांधते हुए बीके अन्जु।

बनारस

जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती महाराज को ब्रह्माकुमारी संस्था की बनारस एवं पश्चिम नेपाल की निदेशिका बीके सुरेन्द्र राखी बांधते हुए।

चुरु, राज.

चुरु कारागार में कैदियों को रक्षा बंधन के अध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डालते हुए सभी कैदियों को राखी बांधकर रक्षा बंधन की शुभकामनाएं दी गई। साथ ही जेलर प्रमोद सिंह को राखी बांधने के पश्चात शिव आमंत्रण भेंट करते हुए बीके सुमन।

फिरोजाबाद, यूपी

विधान परिषद सदस्य डॉ. दिलीप यादव को राखी बांधती हुई बीके सरिता।

गोरखपुर, यूपी

एसएसबी जवान को राखी बांधती हुई गोरखपुर सेन्टर इन्चार्ज बीके पुष्पा।

बुराई रूपी रावण से बचें

अश्विन शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक नवरात्रि मनाने के बाद दशमी को भारत के लोग विजय पर्व अथवा दशहरा मनाते है। वे मानते है, कि राम ने इसी दिन दस सिर वाले रावण पर विजय प्राप्त की थी। अत: वे शत्रु को परास्त करने के लिए इसे पुण्य तिथि मनाते है। उनका यह निश्चय है कि इस दिन सभी कार्य सिद्ध होते है। इसी दिन वे रावण के साथ मेघनाथ और कुम्भकरण का बुत जलाते है और शमी वृक्ष का पूजन करते है क्योकि मानते है कि शमी सभी पापों का नाश करने वाला और शत्रुओं को नष्ट वाला है। आज राम कथा-कथा इतनी लोकप्रिय है कि भारत के बाहर भी कर्अ देशों में लोग राम कथा सुनते और नाटक रूप में दिखाते है। केवल आदि सनातन धर्म ही नही बल्कि बौद्ध, जैन आदि मतावलम्बी भी राम को किसी न किसी तरह मानते है। इन्डोनेशिया देश में तो राम मुस्लमान लोग भी इसे मंच पर अभिनय में लाते है। कम्बोडिया देश के राम मन्दिर (अंगकोर वत्स) का नाम तो विश्व विख्यात है, अवश्य ही यह कथा ऐसे पवित्र एवं महत्वपूर्ण वृत्तान्त को अभिव्यक्त करती है जिस कारण उसने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता और ख्याति प्राप्त कर ली है, हाँ विभिन्न देशों, सम्प्रदायों और भाषाओं में जो रामायण मिलती है, उनमें अन्तर है। शोध कार्य करने वाले कहते है, कि वाल्मीकिद्वारा कविताबद्ध किये जाने से पहले भी राम कथा लोक -गीतों आदि के रूप में प्रचलित थी। अत: समयान्तर में इसके प्रक्षिप्त होने की बात मानी जा सकती है।

कोई भी हो सकता है 'दशानन'

एक बात जो प्राय: कही और मानी है, यह है कि रावण कोई दस सिर वाला व्यक्ति रहा होगा। आज यदि आप किसी शरीर विज्ञान, स्नायुमण्डल विज्ञान मस्तिष्क विज्ञान के ज्ञाता से पुछें तो वह आप को बतायेगा कि दस सिर वाला कोई व्यक्ति नहीं हो सकता। मनुष्य के शरीर के सभी भाग जिस प्रकार मस्तिष्क से जुड़े हुए है,और मस्तिष्क के भाग जिस-जिस कार्य के निमित्त है, उसको जानने वाला कोई व्यक्ति यह नहीं मानेगा कि किसी मानव तनधारी के दस सिर हो सकते हैं। फिर लंका देश के लोग तो उनके देश के ऐतिहासिक अथवा प्रागैतिहासिक काल में रावण नाम का तो कोई राजा हुआ ही नहीं। इसके अतिरिक्त रावण और राम दोनो नाम एक-दूसरे के विपरीतार्थ के बोधक हैं क्योंकि रावण का अर्थ रूलाने वाला और राम का अर्थ लुभाने वाला हैं। अन्यश्च, सीता का जन्म एक सीता (खेत की एक मेढ़) में दबे हुए घट से होने की बात को भी लोगें का विवेक नहीं मानता क्योंकि आज तो वंशोत्पति की क्रिया को लोग वैज्ञानिक दृष्टि से जानते हैं अत: इन तथा अन्य अनेक तथ्यों के अधार पर लोगों की यह मान्यता कि राम कथा एक उच्च आध्यात्मिक सिद्धान्त और वृत्तान्त का बोध कराते हैं। जो कि त्रेतायुग के राजा राम से सम्बन्धित ना होकर जगत के रचयिता, राम परमात्मा से सम्बन्धित हैं, ठीक ही मालूम होती है त्रेतायुगी श्री राजा राम के राज्य में तो दैहिक, दैविक या भौतिक ताप थे ही नहीं। तब तो कोइ असुर, राक्षस या दैत्य इस धरा पर कहीं भी था ही नहीं कि उसका वध किया जा सकता । फिर सीता जैसी राम परायण भगवती को तो ना कोइ बुरी दृष्टि से देख सकता था ना छू ही सकता था।

पांच विकार पुरूष का प्रतीक

यदि इस दृष्टिकोण से सारी कथा पर विचार किया जाये तो यह समस्त विश्व ही सागर से घिरा होने के कारण एक विशाल टापू, द्वीप या महाद्वीप हैं। पहले यह विश्व सोने का था, धन-धान्य से सम्पन्न था। अत: यह सृष्टि ही पुराकाल में सोने की लंका थी। धीरे-धीरे यहाँ के नर नारी नैतिकता के ह्रास की ओर उन्मुख हुए अन्ततोगत्वा यहाँ धर्म-ग्लानि और अधोपतन की स्थिति पैदा हो गई। काम, क्रोध, लोभ, और अहंकार-ये पाँच विकार हर नर और हर नारी के मन पर राज करने लगे। इसी भाव को स्पष्ट करने के लिए रूपक अलंकार में कहा गया है, कि तब दस सिर वाले रावण का राज्य था क्योकि ये विकार दुखित करने वाले अथवा रूलाने वाले रावण है। चूँकि मुख को ही मनुष्य के मन का दर्पण कहा गया है, इसलिए उस समय के नर-नारी के पतन की अवस्था को व्यक्त करने वाला यह दस सिर वाला पुतला रावण प्रतीक रूप में बनाया जाता है।

आत्मा रूपी सीता को बचाओ

उस धर्म ग्लानि के समय मन को हर्षित करने वाले गुण प्राय: लुप्त थे गोया तब राम वनवासी थे, तब हर आत्मा रूपी सीता परमरत्मा रूपी राम को पुकार रही थी तब सीता ने मर्यादा अथवा लक्ष्य की रेखा का अतिक्रमण किया था इसी को लक्ष्मन रेखा से बाहर निकलना कहा गया है बत माया रूपी मारीच रूपी मृग अथवा लोभ ने आत्मा रूपी सीता को छल लीया था। तभी आत्माओं रूपी सीताओ का पाँच विकार रूपी रावण अपहरण किया और उन्हें बन्दी जीवनबद्ध बना दिया तब इस संसार के लोग वानर सम ही हो गये थे।

मन में छिपे बुराई रूपी रावण को मारें

अतः अध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए तो रावण अभी मरा नही है। हर वर्ष लोग लाखों करोड़ो रूपये खर्च करके रावण का बुत ही जलाते है परन्तु रावण स्वयं तो अभी जिन्दा है। वह तो मनुष्य के मन में सिंहासनस्थ है। आश्चर्य की बात है कि हर वर्ष रावण के पुतले को हर पिछले वर्ष की अपेक्षा अधिक ही ऊँचा बनाते है और दूसरी ओर भ्रष्टाचार पापाचार एवं राक्षसाचार रूपी रावण भी बड़ा होता जा रहा है आज समाचार पत्रो में हम हर आये दिन अपहरण ही नही बल्कि बलात्कार के घिनौने वृत्तान्त पढ़ते है। आज कौन है जिसके मन में काम क्रोधादि विकार रूपी रावण राज नही कर रहा? अब हमें चाहिए कि राम कथा के उपरोक्त अध्यात्मिक रहस्य को समझ कर हम सही अर्थ में राम को अपने मन में बसायें और पाँच विकारो रूपी रावण को ज्ञान रूपी राम से मार कर योग रूपी अग्नि से इसको जलाये। इस से ही रावण का नाश होगा। वरना तो अभी रावण मरा नही है, अभी तो उसका पुतला ही जला है।

अज्ञानता की नींद कुम्भकरण का प्रतीक

रावण राज्य के बारे में कहा जाता है कि तब जल, अग्नि, वायु आदि सभी रावण के अधीन थे। आज भी हम टूटी खोलें तो जल आ जाता है, बटन दबायें तो अग्नि दीप्त हो जाती है, स्विच ऑन करें तो पवन चल पड़ती है। कहते है कि रावण ने एक ऐसी सीढ़ी बना ली थी कि वह चन्द्रमा तक पहुँत सकता था। आज ऐसे भी अन्तरिक यान बन चुके है जिन से मनुष्य चाँद पर जा उतरता है रावण राज्य में बस एक ही बात की कमी रह गई थी कि मुर्दे को जिन्दा नही किया जा सकता था बस वही स्थिति आज भी है आज कुम्भकरण जैसे सुस्त और निद्रालु लोग भी है जो आलस्य से अभीभूत रहते है आज मेघनाथ अर्थात् बादल की गर्जन जैसे भयावह करने वाले रौब से ड़राने वाले लोग भी है हर नर नारी के मन रावण अथवा राक्षती वृति का ही राज है आज राम का तो लोग केवल नाम लेते है मन तो काम ही के अधीन है अथवा बगल में तो छुरी ही है रिश्वत, मिलावट आसुरी लक्षण है।

ऐसा लगता था जैसे कोई लाल बत्ती जग रही हो...

अल्फ को अल्लाह मिला, बे को मिली डूठी बादशाही आई तार अल्फ को, हुआ रेल का राही।

यहाँ अल्फ का अर्थ पहले व्यक्ति अर्थात दादा से है और बे उनके भागीदार का वाचक है। ऐसा तार देखकर विचार चलता था कि पता नहीं दादा को क्या हुआ है। जब दादा सिन्ध में आये तो उनका जीवन बिलकुल ही बदला हुआ था।

मृत्यु दशा का साक्षात्कार

हाँ, तो मैं काका मूलचन्द की बीमारी की बात कर रही थी। दादा के पहुँचने से पहले ही काका मूलचन्द ने शरीर छोड़ दिया था। उनकी मृत्यु के बाद एक दिन दादा उनकी कोठी पर एकान्त में बैठे थे। वहाँ उन्हें काका मूलचन्द की मृत्यु-दशा का साक्षात्कार हुआ। उन्हें दिखाई दिया कि आत्मा मस्तक से अलग होती गई और सत्ता छोड़ते-छोड़ते वह पाँव के अंगूठे तक आई। फिर थर्मामीटर के पारे की तरह धीरे-धीरे ऊपर चढ़ते-चढ़ते मस्तक तक आ गई। इस प्रकार उन्हें मृत्यु दशा का साक्षात्कार हुआ। काका मूलचन्द की मृत्यु-दशा के साक्षात्कार के लगभग एक सप्ताह के अन्दर दादा को एक और साक्षात्कार हुआ। दादा ने देखा कि विष्णु उनके सामने प्रकट होकर कह रहे है- अहम् चतुर्भुज तत त्वम्। फिर श्रीकृष्ण, जगन्नाथ जी, ब्रदीनाथ जी और केदारनाथ जी बारी-बारी आये और उन सभी ने भी ऐसे ही कहा। इन साक्षात्कारों से जहाँ दादा को बहुत हर्ष हुआ, वहाँ इस बात पर उनका विचार भी चलने लगा कि-मुझे तत त्वम् का जो वरदान दिया गया है, उसका वास्तव में क्या भाव है। ये साक्षात्कार मुझे किसने कराया?

उन दिनों दादा के गुरू भी आये हुए थे। दादा ने उनके आगमन पर 25,000 रूपये खर्च किये। उन्होंने एक बहुत बड़ी सभा की थी। उसमें बहुत लोग बैठे थे, परन्तु मुझे दादा का उठना-बैठना बहुत निराला लगा। दादा थे तो साकार अर्थात शरीरधारी ही, परन्तु मुझे ऐसा लगा कि उनका शरीर उनसे दूर है। गुरू का भाषण चल रहा था, परन्तु दादा सभा से उठ गये। इससे पहले कभी भी दादा सभा से उठकर नहीं गए थे। मेरा ध्यान दादा की ओर गया। मैंने जसोदा जी, जोकि दादा की धर्मपत्नी थीं, को दादा के पास दादा के कमरे में ले गई। मैं दादा के पास बैठ गई और जसोदा जी गुरू की सभा में लौट अईं।

अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त

मैंने देखा दादा अर्थात् बाबा के नेत्रों में इतनी लाली थी कि ऐसे लगता था जैसे कि उनमें कोई लाल बत्ती जग रही हो। उनका चेहरा भी एकदम लाल था और कमरा भी प्रकाशमय हो गया था। मैं भी शरीर-भान से अलग मानो अशरीरी हो गई। इतने में एक आवाज ऊपर से आती मालूम हुई, जैसे कि दादा कि मुख से कोई दूसरा बोल रहा हो। वह आवाज पहले धीमी थी, फिर धीरे-धीरे ज्यादा हो गई। आवाज यह थी-

निजानन्द स्वरूपं, शिवोहम्
ज्ञान स्वरूपं शिवोहम् ,
शिवोहम्
प्रकाश स्वरूपं, शिवोहम् ,
शिवोहम्।

फिर दादा के नयन बन्द हो गये। मुझे आज तक न वह अद्भुत दृश्य भूलता है, न वह आवाज भुलाई जा सकती है। वह वातावरण भी अविस्मरणीय है और उस समय की वह अशरीरी अवस्था भी मुझे अच्छी तरह याद है। दादा के नयन खुले तो वे ऊपर-नीचे कमरे में चारों ओर आश्चर्य से देखने लगे। उन्होंने जो कुछ देखा था उसकी स्मृति में वे लवलीन थे। मैंने पूछा- बाबा , आप क्या देख रहे हैं? बाबा बोले-कौन था? एक लाइट थी। कोई माइट थी। कोई नई दुनिया थी उसके बहुत ही दूर ऊपर सितारों की तरह कोई थे और जब वे स्टार नीचे आते थे तो कोई राजकुमार बन जाता था तो कोई राजकुमारी बन जाती थी। एक लाइट और माइट ने कहा- यह ऐसी दुनिया तुम्हें बनानी हैं परन्तु उसने कुछ

रियल लाइफ

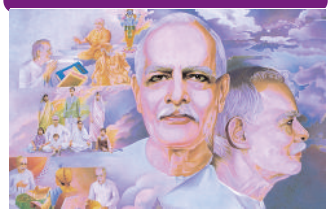

बताया नहीं कि कैसे बनानी हैं। मैं यह दुनिया कैसे बनाऊँगा। वह कौन था- कोई माइट थी।

यह दादा के तन में परमपिता परमात्मा शिव की प्रवेशता थी

अब दादा बहुत गहन विचार में थे। वे गहरी सोच करते और फिर कहते थे- वह कौन था? वह कौन-सी शक्ति है जो मुझे ऐसे ज्ञान-युक्त दिव्य साक्षात्कार कराती है और इनके पीछे रहस्य क्या है। दादा के कुटुम्बीजन भी इस सोच में रहते थे कि पता नहीं दादा को क्या हो गया हैं। दादा अब बहुत ही अन्तर्मुखी हो गए थे और वे आत्मा-चिन्तन में ही तल्लीन मालूम होते थे। स्वयं दादा को भी आगे चलकर यह रहस्य स्पष्ट हुआ कि परमपिता परमात्मा शिव ने दादा के तन में प्रवेश होकर अपना परिचय दिया था । **..क्रमश**

विचार की रचना व यात्रा के शुभारंभ के लिए

जीवन प्रबंधन

हमने पहले छह माह में अपने लक्ष्य तक जाने के लिए मैं कई बार आहत हुई, मैंने अपने-पास नकारात्मक भावनाओं को जन्म दिया, लोगों के दिल को चोट पहुँचाई। अब अगले लक्ष्य की यात्रा के दौरान, हमारी ताकत पहले से बहुत कम हो चुकी हैं। अब भी वही वातावरण है, वही लोग, वही हालात पर दुर्बल भावात्मक अवस्था का मतलब होगा कि हम फिर से खुद को आहत करने, दुःख देने के लिए तैयार हैं।

सुरेश ओबरॉयः हम प्रसन्नता में निर्भरता की बात करते आए हैं - हम प्रसन्नता के लिए बहुत सारी बातों पर कैसे निर्भर करते हैं। सिस्टर शिवानी, आपने कहा ही हम प्रसन्नता को रचते हैं, हम ही उदासी को रचते हैं। अंत में, केवल हम ही जिम्मेवार हैं। हालाँकि, जब आपने जीवन में कुछ हासिल न किया हो तो प्रसन्न होना बहुत कठिन होता है।

सिस्टर शिवानीः यहाँ हम दो पहलू देख सकते हैः एक, अगर हमने इसे प्राप्त कर लिया तो हमें खुशी होगी और दूसरे इसे प्राप्त करने के दौरान हमारा मन खुश होगा। मानो हम किसी यात्रा पर हैं, जहाँ हमें सड़क, रेल या वायु मार्ग से जाना है। जब हम यात्रा का आरंभ करते हैं तो सभी हमें सुरक्षित यात्रा के लिए शुभकामनाएँ देते हैं, वे हमें यह नहीं कहते, किसी तरह अपने लक्ष्य तक पहुँचो। यहाँ केवल लक्ष्य तक पहुँचना ही मायने नहीं रखता, आपकी यात्रा की गुणवत्ता भी बहुत मायने रखती है।

सुरेश ओबेरॉयः सही कहा आपने, हममें से कितने लोग तो यही सोचते हैं कि हमें अपनी मंजिल तक पहुँचना है, भले ही कोई भी अच्छा या बुरा तरीका क्यों?

सिस्टर शिवानीः चलिए ठीक है, इस बात को इस तरह समझते हैं। मान लीजीए आपने अपने लिए एक लक्ष्य तय किया है, फिर भले ही एक छात्र के रूप में अंक लाने का लक्ष्य हो या फिर संगठन में कोई व्यावसायिक पद, या यह संबंधों से भी जुड़ा हो सकता है। हम अपने जीवन को किसी लक्ष्य के बिना चला ही नहीं सकते, क्योंकि किसी लक्ष्य के अभाव में हम निष्क्रिय हो जाएँगे। हम यह जानते ही नहीं हैं कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। जब हम खुद से कहते हैं कि जब मैं लक्ष्य तक पहुँच जाऊँगी तो मुझे बहुत खुशी होगी, इस लक्ष्य को पूरा होने मे छह माह या फिर छह साल भी लग सकते हैं। तो हम आगे बढ़ने लगते हैं, और सोचते हैं कि आने वाले दो साल में, हमें अपने संगठन में इस पद तक आकर दिखाना हैं। अब हम अपनी यात्रा आरंभ करते है, अपने काम का कैसा प्रदर्शन करते हैं, यहाँ यह सब बहुत मायने रखता है। हमारे मन में लगातार एक ही बात चलती रहती है कि जब हम अपना लक्ष्य पा लेंगे, तो हमें बहुत खुशी होगी। अब अगर हमारे काम करने में जरा-सी भी चूक होती है, अगर हमारे आस-पास के लोग सहयोग देना बंद कर दें, अगर रास्ते में कुछ निश्चित बाधाएँ आ जाएँ, तो मेरा क्या होगा?

सुरेश ओबेरॉय : तो हम खुश नहीं होगें।

सिस्टर शिवानी : हम खुद तनाव पैदा करेंगे, और अपने लिए व्याकुलता और बेचैनी पैदा करेंगे। क्यों? क्योंकि लोग हमारी प्रसन्नता के आड़े आ रहे हैं । हम उन्हें न केवल अपने लक्ष्य बल्कि अपनी प्रसन्नता के लिए भी बाधा के तौर पर देख रहे हैं। अब मान लेते हैं कि हम यहाँ से वहाँ सैर कर रहे हैं और हमारा मन कहता है कि प्रसन्नता वहाँ है। हम चलना आरंभ कर देते हैं। हम चल रहे होते है इसलिए आप उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो आपकी प्रसन्नता की राह में बाधा बन रहा है। अब आपको उस जगह से हटाने के लिए कुछ भी करेंगे। अगर वह आपका जूनियर हैं तो आप उस पर गुस्सा करेंगे और तेजी से काम करने का आदेश देंगे। अगर वह आपका सहकर्मी हैं और आपको लगता है कि वह आपको अपने लक्ष्य तक जाने कि राह में बाधा हैं, तो आप उसे अपनी राह से हटाने के लिए कोई भी साजिश भी रच सकते हैं। हो सकता है कि आप अपने मूल्यों के साथ भी समझौता कर लें। हो सकता है कि आप ईमानदार है, यात्रा के दौरान कोई आपसे कहता है कि अगर आपने झूठ कहा, तो आप अपने लक्ष्य तक और भी तेजी से पहुँच सकते हैं। अब, हममें से बहुत से लोग तो अपने लिए दूसरा रास्ता चुनने से पहले, सोचेंगे तक नहीं। हो सकता है कि आप भी झूठ बोले और इस तरह अपनी यात्रा के दौरान अपने मूल्यों और उसूलों के साथ समझौता करने लगे। आपको ऐसा लगने लगेगा कि उसूल और नियम ही आपकी प्रसन्नता पाने की प्रक्रिया में बाधा डाल .रहे हैं।

सुरेश ओबेरॉय : परंतु अगर आपको प्रसन्नता मिलने जा रही है और आपको इसको लिए झूठ बोलना पड़े तो यह बात इतने मायने नहीं रखती।

सिस्टर शिवानीः फिलहाल हम यात्रा में ही हैं। हम अभी मंजिल तक नहीं पहुँचे हैं। हम यात्रा के दौरान तनाव और गुस्सा पैदा कर रहे हैं, और आप अपने उसूलों और नियमों के साथ समझौता कर रहे हैं। इस तरह हम आपनी यात्रा के दौरान नकारात्मक भावों को जन्म दे रहे हैं। छह माह तक हम तनाव और गुस्से को पालते हैं, जो कि बदले में हमारे संबंधों को अस्त-व्यस्त करते हुए, कार्यस्थल पर और लोगों के साथ समस्याएँ खड़ी कर सकता है। हमारे मन की अंदरूनी व्यवस्था गड़बड़ा जाएगी और इससे हमारे शरीरिक स्वास्थ्य पर भी बुरा असर होगा। आखिर में, जब छह माह बाद आप अपने लक्ष्य तक पहुँचोंगे तो आपको क्या महसूस होगा?

सुरेश ओबेरॉय : तो क्या आपको नहीं लगता कि हमें इससे खुशी मिलेगी?

सिस्टर शिवानीः अगर हमने राह में इन सभी नकारात्मक भावों को जन्म दिया है.... ऐसे भावों को अनुभव करने के बाद, अपने आस-पास के सभी लोगों के बीच इनका ही प्रचार किया है, तो यह सब हमारी यात्रा के दौरान हुआ है। मानो हमने खुद को नीचे गिराया हो, खुद को ठेस पहुँचाई हो और फिर कहीं जाकर यहाँ तक आए हों। यहाँ आने की प्रक्रिया के दौरान हम बहुत दर्द से गुजरते हैं पर हमें यहाँ पहुँचने की खुशी होती है। अब आपकी कंडीशनिंग कहती है कि खुशी किसी उपलब्धि या प्राप्ति पर ही निर्भर करती है, हमारी प्रसन्नता हमारी उपलब्धि पर ही आश्रित है।

....क्रमश

अपनी कमजोरियों को शक्ति में बदलो

समस्या-समाधान

प्रश्न : आन्तरिक व्यक्तित्व को सुन्दर बनाने मे अध्यात्मिकता का क्या योगदान है कैसे हम हर जगह सफलता दर्ज करे।

उत्तर : जो आध्यात्मिक व्यक्ति है, हमारी सप्रिचुअलिटी सुबह से प्रारंभ हो जाती है उठते ही हम योगाअभ्यास करते है अपने अन्तंरमन को अच्छे-अच्छे सकंल्प देते है एक खुशनुमा जीवन जीने का तरीका सीख लेते है जीवन मे हमारे व्यावहार अच्छे हो जाते है, हमारे अन्दर साहस, हिम्मत, आत्मविश्वास, मनोबल इनमें बहुत ज्यादा वृद्धि हो जाती है। सप्रिचुअलिटी का अर्थ ही है आत्मा को प्युरिफाई करना, परमात्मा से कनेक्शन जोड़ना, उसकी शक्तियाँ स्वयं मे भरना और जो मोरलवैल्युज है उसके साथ जीवन जीना, ये सप्रिचुलिटी है। तो सप्रिचुलिटी पर चलने वाले व्यक्ति की प्रस्नालिटी हमेशा सुन्दर रहती है आर्कषक रहती है इसलिए उनका सलेक्शन जल्दी हो जाता है।

प्रश्न : राजयोग का अभ्यास कहां-कहां किया जाए कहां-कहां नहीं किया जाए इस पर प्रकाश डालें।

उत्तर: किसी को जॉब लेनी है, किसी को अच्छे अंक लाने है, किसी सर्विस मे अच्छे प्रमोशन लेने है और सफलता का जो फिल्ड है मनुष्य को हर जगह सफलता चाहिए उसमें जो राजयोग का जो प्रयोग है काफी कारगर सिद्ध होते है। पारिवारिक जीवन है उसमें कुछ समस्याऐ चल रही है किसी की प्रोपर्टी की समस्याएं चल रही है, किसी की कोर्ट केस की समस्या चल रही है, जिनको हम विघ्न कहते है परिवारो मे उसमे राजयोग का प्रयोग बहुत ज्यादा सफल होते है। बिमारीयां चल रही है जिसको असाध्य रोग कहते है निंद नही आ रही है, कैंसर जैसा हो गया है उसमें राजयोग का प्रयोग बहुत ज्यादा मदद करता है। मन को एकाग्रह करने के लिए, जीवन को प्युरिफाई करने के लिए, जीवन मे सफलता पाने के लिए, विघ्नों को समाप्त करने के लिए, निरोगी जीवन बनाने के लिए, पारिवारिक संबंधो मे मधुरता लाने के लिए, विशेष रूप से इन सब मे राजयोग की जो शक्ति है वो विशेष काम करती है।

प्रश्न : एक समय था जब हमारे पास सबकुछ था अपना घर, परिवार, कारोबार, ईज्जत, रूतवा, पर आज कुछ नही है। आज मै बहुत ही बुरे दौर से गुजर रहा हूँ, कर्जे मे दबा हुआ हूँ जिनसे कर्ज लिया था उसे मै ईज्जत के साथ वापस देना चाहता हूँ परन्तु चिंता है चाह कर भी नही दे पा रहा हूँ। किसी भी काम मे मुझे सफलता भी प्राप्त नही हो रही है। कृपया बताए कि मै क्या करू।

उत्तर: ऐसे में योग का प्रयोग बहुत ही सफल हो जाता है। इनके सामने विघ्न आ गयें है। विघ्न भी अचानक या बिना कारण नही आते। मनुष्य के पूर्व जन्मों का निगेंटिव कर्मो का जो खाता है वो सामने आ गया है। इसलिए कही भी सफलता नही मिल रही इन्हे ऐसा लगता होगा कि चारों ओर से द्वार बंद हो गये है। मै इनकी भावना स्पोर्ट करूंगा ,जिनसे ये लिया हुआ है वो सम्मान सहित लौट देना चाहता है। क्योकि इस मनुष्य की नियत है, न ये यदी साफ होती है देने की होती है तो आने लगता है सब कुछ और यदि मन के कोने मे यदि ये भाव रहती है कि नही देना है, ऐसे बहुत लोग संसार मे है जो भाव रखते है कि नही देना है इनके पास तो बहुत है हम कहां से लाये हम बच्चो को भुखे रखे क्या नही देना है। लेकिन कुछ ऐसे अच्छे लोग होते है कि जो कहते है कि हमे भले ही कष्ट हो हम सबका देगें। उन्होंने हमे प्यार से दिया है हम भी उन्हें प्यार से लौटायेगे। उन्होंने आवश्यकता मे हमारी मदद कि हम भी उनका वापस लौटा देंगे। ये तो बहुत अच्छी चीज है। इन्हे दो काम करने है एक तो पुन्य रोज़ करने है और दुसरो को सुख देना ताकि उनकी दुआए मिले। ऐसा काई कर्म न हो जो किसी कि बदुआए मिलती रहें।

इसमें विशेष ध्यान देना है सप्रिचुवली बाबा को भोग लगा देना है 7 बार गुरूवार को और तीसरा इनको एक विघ्न विनाशक भटटी करनी है 21 दिन पहले कर ले फिर तीन बार कर लें और ये संकल्प करे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ विघ्न विनाशक हूँ ये स्वमान है हमारे बहुत सुन्दर इन्हे पाँच बार याद करके फिर एक घण्टा राजयोंग करे और ये संकल्प करे ये जो हमारे परिवार या जीवन पर जो विघ्न आये हुए है ये सभी समाप्त हो जाएगें एक इस योग कि शक्ति से वो जो विकर्म सामने आ गए है जो विघ्नो को जन्म दे रहे है वो विघ्नों कि दीवार टुटेगीं। विकर्म नष्ट होगे विघ्नो कि दीवार टुटेगीं और इन्हें रोशनी मिलती चली जाएगी। दुसरी चीज सवेरे उठते ही अतंरमन संकल्प दे जैसे मैं बहुत भाग्यवान हूँ, मैं बहुत सुखी हूँ, मैं बहुत धनवान हूँ, मैं कर्ज मुक्त हूँ। मेरे साथ तो स्वयं भगवान है वे सब मार्ग आपेही खोल देगा बहुत ही सच्चे मन से इसे पाँच बार करेंगे तो जो बाधायें आ रही है। ब्लोकेज हो गये है पैसा आने मे जो रूकाट है वो सब समाप्त हो । हमे पूर्ण विश्वास है ये सब आपके साथ दे सकेगे और इनका जीवन भी सुखी हो सकेगा।

प्रश्न : जो पशु पक्षी और जो जीव जन्तु है जंगलो मे रहते है हमारे आसपास रहते है वे मृत्यु के बाद कहाँ जाते है क्या इनका निवास स्थान परमधाम है क्या ये भी जन्म मरण के चक्कर मे आती हैं?

उत्तरः परमधाम सभी आत्माओं का निवास स्थान है ही लेकिन हर मृत्यु के बाद पूर्ण जन्म होता ही है लेकिन जब चारों युगों का अन्त होता है जब महाविनाश हो जाता है ये सब जीव जन्तुओं की आत्माऐ भी उपर ही चली जाती है। लेकिन परमधाम मे बहुत सारे सेक्सन है, शास्त्रो मे जिन्हे बहुत सारे लोक कह दिया है। जो सबसे महान आत्मा है वो उपर परमपिता सबसे उपर फिर अच्छी आत्माऐ जैसे जैसे लेवल है आत्माओं का उनका लेवल निचे रहता है तो पशु- पक्षियो की आत्माऐ निचे निवास करती है और अपने समय पर पुनः इस धरा पर अवतरित होती है। ये भी जन्म मरण के चक्कर मे आती है मनुष्य पर ही ये पूरी सृष्टी आधारित रहती है। जो स्थिती मनुष्य की, जो स्वरूप मनुष्य का, जो चक्र मनुष्य का वही सब इनका भी चलता है।

किसी का चीज खा पी लेते है। तो ये छोटे-छोटे कर्म विकर्म बनकर उनको भी छोटी-छोटी सजाओं की अनुभुति कराते है। बाकी कर्म के बिना किसी को कुछ नही मिलता है। . . . **क्रमश**

सूचना

सामाजिक सेवाओं तथा आन्तरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक सम्पूर्ण अखबार है। जिससे आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है। यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य	:	**90 रूपये**
तीन वर्ष	:	**260 रूपये**
आजीवन	:	**2200 रूपये**

पत्र व्यवहार का पता

संपादकः ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन-307510 , आबू रोड- 307510, जिला-सिरोही, राजस्थान
मो.8769830661, 9413384884
Email: shivamantran@bkivv.org,
bkkomal@gmail.com

स्वधर्म पहचाने

ज्ञान सरोवर में राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन में जुटे संत

धर्म और कर्म जीवन के अभिन्न अंग

माउंट आबू में राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते अतिथिगण।

शिव आमंत्रण, माउण्ट आबू। वृन्दावन गीता आश्रम के स्वामी डॉ. अमरीश चेतन ब्रह्मचारी ने कहा कि धर्म-कर्म जीवन के अभिन्न अंग हैं। ब्रह्माकुमारी संगठन स्वयं के जीवन की ज्योति प्रकाशित करने के साथ विश्व स्तर पर जनहित कार्यों को मूर्त रूप देने में समर्थ है। वे को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ज्ञान सरोवर में अकादमी परिसर में धार्मिक सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। पटियाला से आए श्रीश्री 108 आचार्य अरविंद मुनि ने कहा कि धर्मग्रंथ मानव को सत्य व अहिंसा की शिक्षा देते है लेकिन उन शिक्षाओं को मन की भूमि पर अंकुरित करने के लिए शिव परमात्मा से संबंध जोड़ना जरूरी है।

परमात्मा की सत्यता को जानना जरूरी

ज्ञान सरोवर निदेशिका राजयोगिनी डॉ. निर्मला ने कहा, कि अविनाशी सुख, शान्ति के लिए अविनाशी सत्ता अर्थात् आत्मा व परमात्मा की सत्यता को जानना जरूरी है। भौतिक साधनों से अल्पकाल का सुख प्राप्त होता है। भरतपुर सिध्दपीठ पीठाधीश्वर डॉ. कौशल किशोर महाराज ने कहा, कि मानवीय चरित्र निर्माण करना सबसे पुण्य का कार्य है। अनावश्यक संस्कारों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए राजयोग का नियमित अभ्यास बेहतर उपाय है।

अनेक धर्मों को जोड़ा

राष्ट्रीय सिक्ख संघ सचिव रघुवीर सिंह ने कहा, कि विश्व में फैले अनेक धर्मों को एक मंच पर एकत्रित कर परिवार की तरह जोड़ने का ब्रह्माकुमारी संगठन ने जो कार्य किया है वह अद्वितीय है। ब्रह्माकुमारी संगठन के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने कहा, कि धनसंग्रह से भौतिक सुख प्राप्त हो सकता है लेकिन स्थायी सुख शांति के लिए स्वयं के अस्तित्व का प्रकाश होना चाहिए। गुजरात बिलीमोरा से आई ब्रह्मवाहिनी हेतल दीदी ने कहा, कि राजयोग का अभ्यास जीवन मूल्यों में निखार लाने के साथ कर्मों को श्रेष्ठ बनाता है। शिव परमात्मा से योग लगाने से ही आत्मा पावन बनती है। प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके मनोरमा ने कहा, कि ज्ञान एक प्रकाश है जो मन के सभी प्रकार के अंधकार को समाप्त कर जीवन में नई ऊर्जा का संचार करता है।

धार्मिक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके रामनाथ, फरीदाबाद से आए शीतल महाराज, राजयोग प्रशिक्षिका बीके कुन्ती, बीके नारायण आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

मन पर पड़ा है दैहिक धर्मों का पर्दा

औरंगाबाद प्रज्ञा प्रसार धम्म संस्कार केंद्र अध्यक्ष भिक्खू विशूद्धानंद बोधी महाथेरा ने कहा, कि आधुनिकता के प्रभाव से डगमगाती अध्यात्मिकता को संबल देने का अद्भुत उदाहरण ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से विश्व में शान्ति स्थापन करने का कार्य सबके समक्ष है। मनुष्य के मन पर दैहिक धर्मो का पर्दा पड़ने से नैतिक मूल्यों का उल्लंघन हो रहा है। अब समय आ गया है विश्व के सभी धर्म निजी स्वधर्म को पहचानकर एकजुट हो जाएं।

कामठी, महा.

देश की रक्षा करने वाले सैनिकों को रक्षा सूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु.प्रेमलता बहन व अन्य बीके बहनें।

बिलासपुर, छग.

शुभमविहार-छत्तीसगढ़ के खाद्य मंत्री पुन्नूलाल मोहले को पवित्र रक्षा सूत्र बांधती हुई बी. के. सविता बहन।

शिक्षा वही है जो मुक्ति की ओर ले जाए

बलरामपुर के नवोदय विद्यालय मे बोलते बीके भगवान।

शिव आमंत्रण, बलरामपुर। नैतिक मूल्यों की कमी यही व्यक्ति गत, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सर्व समस्याओं का मूल कारण है। ज्ञान की व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि जो शिक्षा विद्यार्थियों को अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर, बन्धनों से मुक्ति की ओर ले जाए वही शिक्षा है। उन्होंने कहा कि अपराध मुक्त समाज के लिए संस्कारित शिक्षा जरूरी है। उत्तर प्रदेश के बलरामपूर के नवोदय विद्यालय में नैतिक मूल्यों का महत्व विषय पर स्थानिक सेवाकेंद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम मे माउण्ट आबू से पधारे बीके भगवान ने उक्त विचार व्यक्त किये।

बस्ती के डॉन बॉस्को स्कूल मे भी उनका इसी तरह से कार्यक्रम हुआ। बस्ती मे हुंडाय सर्विस साकेत आटो व्हील्स मे स्थानिक सेवाकेंद्र मे आयोजित कार्यक्रम मे बोलते हुए बीके भगवान ने कहा, समस्याओं का कारण ढूंढने की बजाए निवारण ढूंढे। समस्या का चिंतन करने से तनाव की उत्पत्ति होती है। सकारात्मक विचार से समस्या समाधान में बदल जाती है। इस अवसर पर साकेत आटो व्हील्स के मेनेजर डायरेक्टर विवेक त्रिपाठी, संचालक विपिन त्रिपाठी व स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी बी के गीता उपस्थित थे। गोंडा जिला जेल में कैदियों को कर्मों की गुह्य गति का पाठ पढाते हुए बीके भगवान ने कहा, मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा उसका फल मिलता है। कर्मों से ही व्यक्ति महान या कंगाल बनता है। उन्होंने बताया कि वाल्मिकी रामायण लिखने से पूर्व डाकू थे।

अंतर्राष्ट्रीय /राष्ट्रीय समाचार

बीके सूरज को नेशनल एक्सीलेंस अवार्ड

केंद्रिय मंत्री कलराज मिश्रा द्वारा अवार्ड स्वीकारते राजयोगी बीके सूरज।

शिव आमंत्रण, इंदोर। इंदोर मे अल्मा द्वारा नेशनल एक्सीलेंस अवार्ड 2017 का आयोजन किया गया। इस अवार्ड सेरेमनी में इंग्लैंड, यूरोप, अफ्रीका और अमेरिका के साथ भारत के 25 राज्यों से लगभग 150 से अधिक लोगों को राष्ट्र के सामाजिक व आर्थिक विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया। अल्मा दुनिया भर में लोगों के सामाजिक-आर्थिक विकास में काम करने वाले संगठनो में से एक है, और इस संगठन द्वारा अल्मा नेशनल अवार्ड उन लोगों को दिया जाता है जो अपने संबंधित क्षेत्र में उत्कृष्टता से काम करके राष्ट्र के सामाजिक व आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं। इस वर्ष यह अवार्ड ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के वरिष्ठ राजयोगी बीके सूरज को समाज में अध्यात्मिक जागृति द्वारा अनेक लोगों को सशक्त बनाने के लिए केंद्रिय मंत्री कलराज मिश्रा द्वारा उन्हें प्रदान किया गया। इस सेरेमनी में अल्मा अवार्डस के निदेशक डॉ. संतोष शुक्ला, बीके शशि व बीके उषा भी उपस्थित थे।

परनामी ने की दादी रतनमोहिनी से मुलाकात

रक्षाबंधन के बाद अशोक परनामी को ईश्वरीय सौगात देती दादी रतनमोहिनी।

शिव आमंत्रण, आबूरोड। आबूरोड के शांतिवन में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष अशोक परनामी तथा शहरी विकास मंत्री श्रीचंद कृपलानी ने संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी से मुलाकात की। दादी ने मुलाकात के दौरान कहा, कि हमारा प्रयास पूरे देश व विदेश में भारतीय संस्कृति की स्थापना करना है। जिससे लोगों के जीवन में शांति और सद्भावना का विकास हो। वहीं शहरी विकास मंत्री ने कहा कि बाबा ने पूरे विश्व में मानवता का पाठ पढ़ाया जिससे लोगों की जिन्दगी बदल रही है। दादी से मुलाकात में कई विषयों पर गम्भीरता से चर्चा हुई। इस मुलाकात के दौरान ब्रह्माकुमारीज संस्था के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, भूमि सुधार न्यास के अध्यक्ष सुरेश कोठारी, आबू रोड पालिकाध्यक्ष सुरेश सिंदल, जिला प्रमुख पायल परसुराम पुरिया, भाजपा जिलाध्यक्ष लुम्बाराम चौधरी, आबू रोड रेवदर विधायक जगसीराम कोली तथा बीके भरत समेत बड़ी संख्या में पदाधिकारी उपस्थित थे। मुलाकात के बाद दादी ने ईश्वरीय सौगात भेंटकर सम्मानित किया।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान को उर्जा संरक्षण के लिए अवॉर्ड

उर्जा मंत्री के हाथों अवॉर्ड स्वीकारते बीके भरत, बीके नंदा, बीके पुण्या आदि।

शिव आमंत्रण, पुणे। पुणे में महाराष्ट्र सरकार द्वारा उर्जा संरक्षण और प्रबंधन में उत्कृष्टता के लिए 11वें राज्य स्तरीय सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ उर्जा मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले, विधायक मेधा कुलकर्णी, राजस्थान आबूरोड में शांतिवन के मुख्य अभियंता बीके भरत ने किया। महाराष्ट्र सरकार द्वारा इस वर्ष ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान को उर्जा संरक्षण के लिए अवॉर्ड प्रदान किया जिसे संस्थान के मुख्य अभियंता बीके भरत, एनर्जी ऑडिटर बीके केदार, लातुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नंदा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके पुण्या ने स्वीकार किया। समारोह में उर्जा मंत्री ने संस्थान द्वारा चलाये जा रहे सेव मिलियन यूनिट्स ऑफ पॉवर अभियान का शुभारंभ किया। अंत में उर्जा मंत्री ने भी उर्जा संरक्षण के लिए संकल्प लेते हुए प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किए।

ब्रह्माकुमारीज का प्रयासः पांच हजार भोजन के पैकेट, कम्बल जरूरी चीजों का वितरण, पांच हजार पैकेट गुजरात भी रवाना

सिरोही, जालोर की भीषण आपदा में राहत सामग्री वितरित

शिव आमंत्रण ■ आबूरोड

सिरोही, जालोर में आयी भीषण बाढ की तबाही में राहत कार्य के लिए ब्रह्माकुमारीज संस्थान तथा ग्लोबल हास्पिटल की ओर से तीन एम्बुलेंस तथा चिकित्सकों की टीम ने रेवदर, मंडार तथा जालोर के प्रति प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध कराकर राहत दी। बीस लोगों की टीम में कुल बीस लोग है जिसमें चिकित्सक तथा नर्सेस भी है जो लोगों को चिकित्सा मुहैय्या करायी। इसके साथ ही करीब दस हजार से ज्यादा जरूरी चीजें जैसे बिस्किट, नमकीन, खाने के पैकेट, तीन सौ कम्बल आदि भी वितरित किये। जिला कलेक्टर के निर्देशन में यह टीम जरूरत मंद लोगों को हर सम्भव सहायता प्रदान करेगी। इसके लिए तीन एम्बुलेंस, सवारी वाहन के साथ संस्था के सदस्यों का दल भी साथ रवाना किया गया। ब्रह्माकुमारीज संस्था के सूचना निदेशक बीके करूणा, मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ. बनारसी, शांतिवन के अभियन्ता बीके भरत समेत कई लोगों ने हरी झंडी दिखाकर रवानगी दी। रवानगी के अवसर पर सम्बोधित करते हुए बीके करूणा ने कहा कि आपदा के समय में लोगों की मदद करना सबसे बड़ा पुण्य है। ऐसे वक्त में हर किसी को भी मदद करना चाहिए।

चिकित्सकों की टीम के साथ एम्बुलेंस तथा राहत सामग्री को रवाना करते अतिथि।

बाढ़ प्रभावितों को खाने के पैकेट और कम्बल और दवाईयां बांटते संस्था के सदस्य।

ब्रह्माकुमारीज संस्था इसके प्रति कटिबद्ध है। पांच हजार पैकेट बांटे आबू रोड तथा आसपास के क्षेत्रों में प्रारम्भिक दिनों से लेकर अब तक पांच हजार खाने के पैकेट के साथ कम्बल, दवाइयां वितरित की गयी है। माउण्ट आबू के उपखण्ड अधिकारी सुरेश ओला, तहसीलदार मनसुख डामोर के निर्देशन में लगातार यह प्रयास जारी है।

राहत सामग्री का वितरण

राजस्थान के जालोर सिरोही नहीं बल्कि गुजरात के बनासकांठा तथा पाटन क्षेत्र में आयी बाढ़ से प्रभावित लोगों के दस हजार से ज्यादा पैकेट, बिस्किट, जूते, चप्पल, कम्बल आदि वितरित किये। इस अवसर पर बीके भानू, बीके रामसुख मिश्रा, बीके मोहन, अनूप सिंह, बीके सचिन, बीके जीतू, बीके चन्द्रशेखर, डा. प्रताप मिडढा, बीके चन्द्रेश, बीके दिव्या, बीके जीतू, बीके छत्रपाल, बीकेलक्ष्मण समेत बड़ी संख्या में लोगों ने टीम को आपदा में मदद की।

अन्ना हजारे को बांधी विश्व की सबसे छोटी राखी

शिव आमंत्रण, मुम्बई। समाजसेवी अन्ना हज़ारे को विश्व की सबसे छोटी राखी बांधी गयी, जिसे ग्लोबल रिकॉर्ड्स् बुक में शामिल किया गया है। राखी की उंचाई 0.2 सें. मी., चौडाई 0.2 सें. मी. है और वजन .300 मिलीग्राम है। बीके डॉ. दीपक हरके ने यह राखी बनाई है और इस राखी को विश्व रिकॉर्ड बुक मे शामील कर दिया गया है। इस अवसर पर समाजसेवी अन्ना हज़ारे ने राजयोगिनी दादी जानकी के सानिध्य में बिताए कुछ लम्हों को अपने शब्दों द्वारा व्यक्त करते हुए अपनी खुशी ज़ाहिर की।

किसान सम्मेलन : अपने लिए जैविक खेती करें

किसान सम्मेलन का उद्घाटन करते अतिथि।

शिव आमंत्रण, शादाबाद। उत्तर प्रदेश के शादाबाद में संस्थान के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित किसान सम्मेलन का शुभारंभ जिला कृषि अधिकारी बिपिन कुमार, भाजपा नेता प्रीती चौधरी, राजस्थान के टोंक से पूर्व कृषि अधिकारी बीके प्रहलाद, माउंट आबू से आए प्रभाग के सदस्य बीके सुमन्त, हाथरस क्षेत्र की प्रभारी बीके सीता, स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी बीके भावना, भरतपुर से राजयोग शिक्षिका बीके बबिता की उपस्थिति में हुआ। सम्मेलन में बीके प्रहलाद ने सभी किसानों को परमात्मा की याद में रहकर खेती करने की सलाह दी। बीके सुशांत ने किसानों को देशी खाद बनाने का फार्मूला सिखाया और परमात्मा की पवित्र किरणे डालकर अपनी फसल को हम कैसे लाभ पंहुचा सकते है इसके बारे मे प्रयोग करके दिखाया। प्रीती चौधरी ने कहा कि किसान भाई कम से कम अपने लिए तो राजयोग सीखें, जैविक खेती करें जिससे उन्हें शुद्ध अन्न की प्राप्ति हो और बीमारियों से बचे रहें। विपिन कुमार ने कृषि संबंधी सरकारी योजनाओं से अवगत कराया। संयोजिका बीके भावना शांति की गहन अनुभूति कराई। आगरा से बीके मंजरी ने कार्यक्रम का संचालन किया, भरतपुर से बीके बबिता ने रूहानी ड्रिल करवाई।

प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डीबी सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित। Posted at Shantivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month

सलाहकार संपादकः प्रो. कमल दीक्षित **संपादकः** ब्र.कु. कोमल, **संयुक्त संपादकः** ब्र.कु. पुष्पेन्द्र। **आरएनआई नंबरः आरजेएचआईएन/ 2013/53539**

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

फुकुयामा में योग कार्यक्रम

शिव आमंत्रण, फुकुयामा। जापान के हिरोशिमा प्रान्त के फुकुयामा में ब्रहमाकुमारीज़ द्वारा टू फील योगा विषय पर कार्य म का आयोजन किया गया। भारत के कंसुलेट जनरल, ओसाका-कोबे द्वारा समर्थित, एफ एम फुकुयामा, जापान योग थेरेपी सोसाइटी और मेनिची न्यूज़ पेपर्स फुकुयामा द्वारा यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। लोगों के मन और शरीर, मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए... यह सामूहिक योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने फिज़िकल एक्सरर्साइज़ करने के साथ-साथ राजयोग मेडिटेशन का भी अभ्यास किया। कार्यक्रम में 100 से अधिक लोगों शामील हुए और योग के महत्व को जाना। इसी दौरान सभी को स्वयं के वास्तविक स्वरुप की जानकारी देने के साथ-साथ ऑलमाइटी अथोरिटी से कनेक्ट होने की विधि भी बताई।

चाईना मे हो रहा है राजयोग लोकप्रिय

शिव आमंत्रण,ग्वांगझौ। चीन के ग्वांगझौ में कंसूलेट जनरल ऑफ इंडिया और ब्रह्माकुमारीज द्वारा स्पेशल इवेंट का आयोजन किया गया। सिटी सेंटर के 5 स्टार होटल में आयोजित इस इवेंट का मुख्य उद्देश्य लोगों को राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से माइंड और बॉडी को हेल्दी बनाने की जानकारी देना था जिसमें 500 लोगों ने सहभागिता कर लाभ उठाया। इस इवेंट का उदघाटन कंसूलेट ऑफिसर तरूण कुमार, इंडियन कंसूलेट से आरती वासुदेव, ब्रह्माकुमारीज में चीन की कॉर्डिनेटर बीके सपना ने कैंडल लाइटिंग कर किया। इस मौके पर अन्य कई योगा टीचर्स को भी इन्वाइट किया गया था जिसका उपस्थित लोगों ने पूरा लाभ लिया और फिजीकल एक्सरसाइज की साथ ही कलाकारों ने चाइनिज़ योगा का बेहतरीन प्रदर्शन किया। बीके सपना ने राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताते हुए कमेंट्री द्वारा राजयोग का अभ्यास कराया जिसकी सभी ने सराहना की। अन्य लोगों ने राजयोग क्लासेस करने व योग के आध्यात्मिक आयाम को जानने की इच्छा जाहिर की।

राजयोग पर ऑस्ट्रेलिया मे वर्कशॉप

शिव आमंत्रण, सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के सिडनी में इंडियन कंसूलेट, इंडियन कल्चरल सेंटर और ब्रह्माकुमारीज द्वारा राजयोगा इनर पावर एण्ड इनर पीस विषय पर वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इसमें कंसूलेट जनरल मिस्टर वानलावाला, एमएलए डेविड क्लार्क, ऑस्ट्रेलिया के नेशनल कॉर्डिनेटर बीके चार्ली हॉग, इनर स्पेस सेंटर से बीके मोरनी मुख्य रूप से शामिल रहीं। इनर पावर और इनर पीस को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित इस इवेंट में बीके किम ने ओपेरा सिंगर हैदर ली के साथ हठ योग का प्रदर्शन किया व भारतीय मंत्रों का उच्चारण किया। बीके अमी ने राजयोग पर पैनल डिस्कशन का भी आयोजन किया जिसके द्वारा लोगों को राजयोग के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। अंत में इनर स्पेस सेंटर की बीके आशा ने सभी को शुभकामनाएं दीं व उपस्थित अतिथियों ने राजयोग को अपने रोजमर्रा के जीवन में शामिल करने का आह्वान किया।